. . . ान,चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

खण्ड एक

बृहत् सूक्ति कोश

विश्व के लब्ध-प्रतिष्ठ मनीषियों की विशिष्ट सूक्तियों का संदर्भ-ग्रन्थ

सम्पादक

शरण

प्रकाशक   प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली
सर्वाधिकार   प्रकाशकाधीन
सम्पादक   . शरण
संस्करण   · १९७२
खण्ड   : प्रथम
मूल्य   : चार रुपये
मुद्रक   रूपक प्रिन्टर्स, दिल्ली-३२

VRIHAT SOOKTI KOSH : SHARAN : PART I
(A Book of Quotations)   Rs. 4.00

आमुख

सूक्तियाँ विश्व साहित्याकाश के देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र ही नही अपितु मानव के अन्तराल मे व्याप्त उल्लास की तरंगों को उद्वेलित करने वाली ऐसी ज्योति है जिसके प्रकाश मे बुद्धि और हृदय एक साथ आलोकित होते हैं। यदि ये न हो तो साहित्य नीरस हो जाए और हमारा हृदय स्वर्गिक आनन्द से वंचित हो जाए। जहाँ ये अपने माधुर्य से अन्धकार के आवरण को छिन्न-भिन्न करके उसे प्रकाशित कर सकती हैं, जहाँ ये निराशा के बंधनो मे जकड़े हुए पत्रों मे समीर की तीव्र गति डाल सकती हैं, जहाँ ये अन्तरतम की असह्य पीड़ा को क्षणमात्र मे दूर कर सकती हैं; वहाँ ये गम्भीर से गम्भीर आघात पहुँचाने की भी क्षमता रखती हैं। इस पर भी यही कहना होगा कि ये सूक्तियाँ मानव सृष्टि मे कल्पतरु के समान हैं।

इन सूक्तियों की विशाल छाया मे विश्राम कर मानव अपने जीवन पथ की थकान को दूर कर भविष्य की दुर्गम यात्रा को शांतिपूर्वक पूर्ण कर लेता है। अत ये सूक्तियाँ मानव जगत् मे ईश के समान ही सर्वव्यापी बन गई हैं। इनकी उपदेशात्मक छटा निराली ही है। इनमे नीति के वचन अल्प शब्दो मे गागर मे सागर के समान अद्वितीयता से व्यक्त होते हैं। हमारी संस्कृत देव भाषा मे तो इनका भण्डार है। अन्य विदेशीय भाषाओं मे भी इन पर अच्छी पुस्तकें निकली हुई हैं। हिन्दी मे भी इन सूक्तियों पर निकली हुई कई पुस्तकें देखने को मिली, पर सभी अपने मे अपूर्ण-सी ही थी। हिन्दी मे इस कमी को दूर के लिए मैंने यह क्षुद्र सा प्रयास किया है। युग-युग के लब्ध प्रतिष्ठ मनीषियों की सूक्तियों के संकलन

विषय-तालिका

अंतःकरण	१	अनुग्रह	२९
अन्त	४	अनुभव	३०
अन्तर्बल	४	अनुभूति	३१
अन्धकार	४	अनुराग	३२
अन्धा	५	अनुशासन	३३
अकर्मण्यता	६	अन्न	३३
अकृतज्ञ	७	अन्याय	३४
अकाल	७	अन्वेषक	३६
अकेला	८	अपकार	३६
अकुशल	८	अपकीर्ति	३६
अखण्ड	८	अपना-पराया	३७
अज्ञान	९	अपमान	३८
अछूत	१४	अपयश	३९
अति	१५	अपराध	४०
अतिथि	१६	अपराधी	४१
अतीत	१७	अपरिग्रह	४१
अतृप्त	१७	अबला	४३
अत्याचार-अत्याचारी	१८	अभय	४४
अधर्म	१९	अभागा	४५
अधिकार	२०	अभाव	४५
अध्ययन	२३	अभिभावक	४५
अध्यापक	२४	अभिमान	४५
अनाथ	२५	अभिलाषा	४८
अनादर	२५	अभ्यास	४९
अनासक्ति	२६	अमरता	४९
अनुकरण	२८	अमितव्ययी	५०

इसमें लगभग सभी सर्व प्रतिष्ठ देश-विदेशी विद्वानों, कवियों,
संतों एवं दार्शनिकों की मूल व अनूदित सूक्तियों के रूप में अमर
संकलन है। इसमें मैंने आधुनिक लेखकों की सूक्तियों को भी उसी
संकलित किया है जिस सम्मान से प्राचीन विचारकों एवं लेखकों की
को। प्रत्येक खण्ड के अंत में विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-
यिताओं की तालिका दे दी गई है। इसमें पाठकों को विशेष
मिलेगी।

वृहत सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड मेरे कृपालु पाठकों चाहे वे
हों, चाहे साहित्यकार हों, चाहे प्राध्यापक हों और चाहे राजनीतिज्ञ
हाथों में से गुजरेगा, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। उनसे केवल मेरा
अनुनय यही है कि वे इनमें जो अपूर्णता एवं त्रुटि देखें उसके विषय
सूचित करने की कृपा करें। इनमें अधिक-से अधिक संशोधन के लिए
भाव से मित्रों के परामर्श का स्वागत करूँगा।

विषय-तालिका

अंतःकरण	१
अन्त	४
अन्तर्बल	४
अन्धकार	४
अन्धा	५
अकर्मण्यता	६
अकृतज्ञ	[illegible]
अकाल	[illegible]
अकेला	[illegible]
अकुशल	८
अखण्ड	८
अज्ञान	९
अछूत	१४
अति	१५
अतिथि	१६
अनीत	१७
अतृप्त	१७
अत्याचार-अत्याचारी	१८
अधर्म	१९
अधिकार	२०
अध्ययन	२१
अध्यापक	
अनाथ	

अनुग्रह
अनुभव
अनुभूति
अनुराग
अनुशासन
अन्न
अन्याय
अन्वेषक
अपकार
अपकीर्ति
अपेक्षा-पत्र
अपमान
अपयश
अपराध
अपराधी
अपरिग्रह
अपना
अभय
अभागा
अभाव

[illegible]	५२	आत्म-सम्मान
अशांति	५३	आत्म-हत्या
असंतोष-असंतोषी	५३	आत्म-हीनता
असफलता	५४	आत्मा
असम्भव	५४	आत्मीयता
अस्पृश्यता	५५	आदत
अहंकार-अहंकारी	५७	आदर्श
अहिंसा	५९	आनन्द
आंख	६७	आपत्ति
आंसू	६९	आभूषण
आकर्षण	७१	आय
आकांक्षा	७१	आयु
आकाश	७३	आरत
आक्षेप	७३	आरम्भ
आग	७३	आराम
आचरण	७४	आलस्य
आचार	७५	आलोचना
आड़	७६	आवश्यकता
आजादी	७६	आवरण
आज्ञा-पालन	७७	आवागमन
आत्म-कथा	७७	आवेग
आत्म-गौरव	७८	आवेश
आत्म-निरीक्षण	७८	आश्चर्य

अंतःकरण कायर होता है, और जिन बुराइयों को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें दोषी ठहराने की उसमें प्रायः न्याय-बुद्धि भी नहीं होती।

—गोल्ड स्मिथ

मानव के अन्दर ईश्वरीय उपस्थिति ही अंतःकरण है।

—स्वेडन बोर्ग

पापी अंतःकरण की पीड़ा जीवित मानव के लिए नरक है।

—कालविन

अंतःकरण हमारी जीवित अवस्था में एक छोटे-से कीड़े के रूप में रहता है और मृत्यु-शय्या पर पहुँचने पर वही सर्प का रूप धारण कर लेता है।

—जेरोल्ड

हमारा अंतःकरण देव-भोग्य अमृत के पात्र की रक्षा करने का आगार है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विभाग)

एक बार अंतःकरण की ओर आँख घुमाओ, तुरन्त ही समस्त अर्थ समझ में आ जायेगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विमुक्तता)

अंतःकरण न्याय का कक्ष है।

—कहावत

मानव का अंतःकरण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा नेत्र और मुख के विकारों से विदित हो जाता है।

—पंचतंत्र

जब अंतःकरण भाव को ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत हो, तो श्रद्धा-हीन श्रोता के लिए केवल वाक्य समस्त अर्थ का उद्घाटन नहीं कर सकता।

अंतःकरण जब प्रेमानुभूति में आप्लुत हो जाता है, तभी जीवन की गति सरल हो जाती है।

—प्रसाद

जैसे मेघों में जरा भी कण पड़ जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नहीं दीख पड़ती, ऐसे ही अंतःकरण में थोड़ी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नहीं हो पाते।

—स्वामी भजनानन्द

जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखाई पड़ता है जबकि शीशा साफ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अंतःकरण में ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

—स्वामी भजनानन्द

सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करण प्रवृत्तयः।

(संदेह की दशा में सज्जनों के अंतःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तल)

मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता। उसी प्रकार जिनका अंतःकरण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता।

—रामकृष्ण परमहंस

वास्तविक आनन्द का आधार हमारे अंतःकरण में ही है।

—सेनेका

मनुष्य का अंतःकरण ही ईश्वरीय वाणी है।

—*बायरन*

वही मानव ईश्वर के दर्शन कर सकता है, जिसका अंतःकरण स्वच्छ एवं पवित्र है।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

अंतःकरण हमें भीरु बना देता है।

—शेक्सपियर (हैमलेट)

अंतःकरण कायर होता है, और जिन बुराइयों को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें दोषी ठहराने की उसमें प्रायः न्याय-बुद्धि भी नहीं होती।

—गोल्ड स्मिथ

मानव के अन्दर ईश्वरीय उपस्थिति ही अंतःकरण है।

—स्वेडन बोर्ग

पापी अंतःकरण की पीड़ा जीवित मानव के लिए नरक है।

—कालविन

अंतःकरण हमारी जीवित अवस्था में एक छोटे-से कीड़े के रूप में रहता है और मृत्यु-शय्या पर पहुँचने पर वही सर्प का रूप धारण कर लेता है।

—जेरोल्ड

हमारा अन्तःकरण देव-भोग्य अमृत के पात्र की रक्षा करने का आगार है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विभाग)

एक बार अंतःकरण की ओर आँख घुमाओ, तुरन्त ही समस्त अर्थ समझ में आ जायेगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विमुक्ता)

अंतःकरण न्याय का वश है।

—कहावत

मानव का अंतःकरण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा नेत्र और मुख के विकारों से विदित हो जाता है।

—पंचतंत्र

जब अंतःकरण भाव को ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत हो, तो श्रद्धा-हीन श्रोता के लिए केवल वाक्य समस्त अर्थ का उद्घाटन नहीं कर सकता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दौ)

कोई साक्षी इतना विकट और कोई अभियोक्ता इतना शक्तिश
नहीं है, जितना कि अपना ही अंतःकरण।

—सोफोक्ल

अंतःकरण की परिपूर्णता में से ही वाणी मुखरित होती है और अ
करण की परिपूर्णता के पश्चात् ही हाथ भी कार्य करते हैं।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग

यदि कोई मनुष्य लगातार अशुभ कर्म करे तो उसका अंतःकरण
संस्कारों से मलिन हो जायेगा।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग

अंत

सर्वेक्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्याः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥

(सभी संग्रहों का अंत क्षय है, बहुत ऊंचे चढ़ने का अन्त नीचे गि
है। संयोग का अन्त वियोग है और जीवन का अन्त मरण है।)

—वाल्मीकि रामा

अंतर्बल

अंतर्बल हो रे जन भू-जीवन, बाह्य शक्ति का नियत जगत में क्षय
आत्मबोध से बहता युग-चारण, मनुज सत्य विजयी होता निश्चय

—सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन

अंधकार

तमसो मा ज्योतिर्गमय।
(मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।)

—बृ

सूर्योदय होने से पूर्व घोर अंधकार होता है।

—फुलर

अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन मृत्यु की ओर।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (बहूरानी की हाट)

अंधकार में एक विशिष्टता है जिसका अवसान कहीं भी नहीं होता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (निविशेष)

अंधकार का समय विकृति का होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

धूप का ऐसा तना वितान, अंधेरा कठिनाई में फँसा,
भागने को न मिली जब राह, आदमी के भीतर जा बसा।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (चक्रवाल)

आरोह तमसो ज्योतिः।

(अंधकार (अविद्या) से निकल प्रकाश (ज्ञान) की ओर और बढ़ो।

—वेद

अंधा

अन्धे कुछ नहीं भूलते। उनका कोई संसार नहीं है। वे तो केवल अपने
र को ही लिए हुए हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दृष्टिदान)

को वा महान्धो, मदनातुरो यः।

(बड़ा भारी अन्धा कौन है, जो काम-वश व्याकुल है।)

—स्वामी शंकराचार्य

न पश्यन्ति च जन्मान्धाः कामान्धो नैव पश्यति।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोषं न पश्यति॥

(जन्म से अन्धे नहीं देखते, काम से अन्धा हो रहा है उसको सूझता नहीं,
ादोन्मत्त किसी को देखते नहीं, स्वार्थी मनुष्य दोषों को नहीं देखता।)

—चाणक्य

अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन मृत्यु की ओर

—रवीन्द्रनाथ ठ

कृपण अंधा होता है; क्योंकि वह धन के अतिरिक्त और कि सम्पत्ति को नहीं देखता। फिजूलखर्ची करने वाला अंधा होता है; क्यों वह आज ही को देखता है, कल की नहीं सोचता। मोहित करने वाली अंधी होती है, क्योंकि वह जरा की झुर्रियां नहीं देखती। विद्वान् अं होता है, क्योंकि वह अपने अज्ञान को नहीं देखता।

—विक्टर ह्यू

एक काली होती अंधता, ज्योति से जो पलती है दूर।
एक उजली होती जो सदा, ज्ञान से ही रहती है चूर॥

—रामधारी सिंह दिनकर (चक्रवाल

अन्धों की आँखें न खुलें, पर मन तो खुल सकता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि

अन्धे पेट के बड़े गहरे होते हैं, इन्हें बड़ी दूर की सूझती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि

अन्धों में मुरौवत नहीं होती।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

चंचल प्रकृति बालकों के लिए अन्धे विनोद की बात हुआ करते हैं।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

नई बीबी पाकर आदमी अन्धा हो जाता है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

जिसे शास्त्रों का ज्ञान नहीं वह एक प्रकार से अन्धा है।

—हितोपदेश

ता

अपनी प्रगति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना हरेक अकर्मण्यता पर बोलती है।

—गेटे

नहाना धोना, वस्त्र बदलना, भोजन चबा-चबाकर खाना।
बाल काढ़ना, क्रीम मसलना, घर में ऊपर नीचे जाना।।
यही काम क्या कम है भाई, इनमें ही आफत आती है।
इनके ही 'प्रेशर' के मारे सेहत नहीं सुधर पाती है।।
—गोपालप्रसाद व्यास (चले आ रहे हैं)

अकर्मण्यता ही मृत्यु है।

—मुसोलिनी

हमें केवल अकर्मण्यता से ही भयभीत होना चाहिए।

—अज्ञात

अकृतज्ञ

अकृतज्ञता इंसानियत के प्रति धोखा है।

—टामसन

भलाई का बदला न देना क्रूरता है और उसका बुराई में उत्तर देना पिशाचता है।

—सेनेका

अकृतज्ञता ही मानवता का जहर है।

—सर पी० सिडनी

पशुओं ने अकृतज्ञता पुरुषों के लिए छोड़ दी है।

—कोल्टन

अकृतज्ञ मनुष्य से एक कृतज्ञ कुत्ता श्रेष्ठ है।

—शेख सादी

अकाल

अकाल के दिनों में जब प्यास से तड़पने पर भी पपीहे को पानी न मिले तो उसका चुप रहना ही अच्छा है।

—शरण (पंछी, पिंजरा और उड़ान)

अकेला

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा॥

(जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणों से समस्त संसार को प्रकाशमान कर देता है, उसी प्रकार एक ही वीर अपनी शूरता और पराक्रम—साहस से सारी पृथ्वी को अपने पैरों तले कर लेता है।)

—भर्तृहरि

विश्व में सर्व-शक्तिशाली मानव वही है जो अकेला रहता है।

—इब्सन

जो अकेले चलते हैं, वे शीघ्रता से बढ़ते हैं।

—नेपोलियन

एकस्स चरितं सेय्यो, नत्थि बाले सहायता।
(अकेला विचरना अच्छा है, परन्तु मूर्ख साथी अच्छा नहीं।)

—महात्मा बुद्ध (मज्झिमनिकाय)

अकुशल

अकुशल लोग ही कृत्रिमता के द्वारा अपने अभाव की पूर्ति के लिए प्राणान्त चेष्टा किया करते हैं, वे स्पष्टता को कहते हैं शौर्य और निर्लज्जता को कहते हैं पौरुष।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

अखण्ड

व्याख्या बन्द करके, तपस्या भंग करके जो फल मिलता है, वही अखण्ड है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

सुत्ता अमुणी,
मुणिणो सया जागरन्ति ।
(अज्ञानी सदैव सुप्त रहते हैं और ज्ञानी सर्वंव जागते रहते हैं।)
—महावीर स्वामी (आचारांग)

बाले पापेहि मिज्जती।
(अज्ञानी आत्मा पाप करके भी अहंकार करता है।)
—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

इओविद्धं समाणस्स पुणो संबोही दुल्लभा।
(जो अज्ञान के कारण अब पथभ्रष्ट हो गया है, उसे फिर भविष्य में संबोधि मिलना कठिन है।)
—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

अन्नाणी किम् काही, किम् वानाहीसेयपावग ?
(अज्ञानी आत्मा क्या करेगा? वह पुण्य एवं पाप को कैसे जान पाएगा।)
—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

आसुरीयं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं।
(अज्ञानी जीव विवश हुए अंधकाराच्छन्न आसुरी गति को प्राप्त होते हैं।)
—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

न जिणइ अंधो पराणीयं।
(अंधा कितना ही बहादुर हो, शत्रुसेना को पराजित नहीं कर सकता। इसी तरह अज्ञानी साधक भी अपने विकारों को विजित नहीं कर सकता।)
—आचार्य भद्रबाहु (आचारांग निर्युक्ति)

अण्णाणमयो जीवो कम्माणं कारगो होदि।
(अज्ञानी आत्मा ही कर्मों का कर्त्ता होता है।)
—आचार्य कुन्दकुंद (समयसार)

जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्ख संभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।

(जितने भी अज्ञानी—तत्त्वबोध हीनपुरुष हैं, वे सब दुःख के पात्र हैं। इस अनंत संसार मे वे मूढ़ प्राणी बारम्बार विनाश को प्राप्त होते रहते हैं।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

जो अप्पणा दुमण्णादि, दुक्खिद सुहिदे करेमि सत्तेति।
सो मूढो अण्णाणी, णाणी एत्तो दु विवरीदो॥

—आचार्य कुंदकुंद (समयसार)

जं अण्णाणी कम्मं, खवेदि भवसयस हस्स कोडीहिं।
तं णाणी तिहिं गुत्तो, खवेदि उस्सास मेत्तेण॥

—आचार्य कुंदकुंद (प्रवचनसार)

जहण्हाउत्तिण्ण गओ, बहु अतर रेणुयं छुभइ अगे।
सुट्ठु वि उज्जममाणो, तह अण्णाणी मलं चिणइ॥

(जिस तरह हाथी स्नान करके फिर बहुत-सी धूल अपने ऊपर डाल लेता है, उसी तरह अज्ञानी साधक साधना करता हुआ भी नया कर्म फल संचय करता जाता है।)

—बृहत्कल्पभाष्य

अण्णाण परमं दुक्खं, अण्णाणा जायते भयं।
अण्णाणमूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिण॥

(अज्ञान सबसे बड़ा दुःख है। अज्ञानसे भय उत्पन्न होता है, सब जीवों के जगत् भ्रमण का मूल कारण अज्ञान ही है।)

—इसिभासियाइं

योऽविद्वान् संचर्इदि आर्तिमाच्छंति।

(अज्ञानी यदि किसी कर्म में प्रवृत्त होता है तो वह सिर्फ क्लेश ही पाता है।)

अज्ञो भवति वै बालः।

(वास्तव में अज्ञ (मूर्ख) ही बालक है, अल्पवयस्क नहीं।)

—मनुस्मृति

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्य शुचि-सुखात्म ख्यातिरविद्या।

(अनित्य, अशुचि, दुःख तथा जड़ विषयों में नित्य, शुचि, सुख तथा आत्मस्वरूपता की प्रसिद्धि ही अज्ञान है।)

—योगदर्शन

हिरदू की कहिये नहीं, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखावे क्रोध॥

अज्ञान की अवस्था में सर्वस्व खो जाने पर भी वेदना सोई रहती है।

—प्रसाद

आरम्भन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥

(अज्ञानी मनुष्य थोड़ा ही आरम्भ करते हैं और बहुत व्याकुल होते हैं, परन्तु ज्ञानी बड़ा कार्य आरम्भ करने पर भी नहीं घबराते।)

—हितोपदेश

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है, वरन् अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

अज्ञान के समान दूसरा वैरी नहीं है।

—चाणक्य

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है।

—स्वामी शंकराचार्य

अज्ञान मन की निशा है, किन्तु वह निशा जिसमें न तो चन्द्र है और न नक्षत्र।

—कनफ्यूशस

अज्ञान हठधर्म की माता है।

—पोप

अनपढ़ रहने से जन्म न लेना ही अच्छा है, क्योंकि अज्ञान विपदाओं का मूल है।

—प्लेटो

अपनी विद्वत्ता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है।

—जेरेमी टेलर

कभी-कभी ऐसा वक्त भी आता है जबकि अज्ञानता ही सुखदायी होती है।

—डिकेन्स

अज्ञान ही अन्धकार है।'

—शेक्सपियर

जहां अज्ञानता परम सुख हो वहां ज्ञानी होना मूर्खता है।

—टामस ग्रे

अज्ञान डर की माता है।

—एच० होम

अछूत

सुर-सरि औ अन्त्यज दुहूं, अच्युत-पद-सम्भूत।
भयौ एक क्यों छूत औ, दूजो रह्यौ अछूत॥

—वियोगीहरि (वीर सतसई)

'हरिऔध' छलछंद छोड़ो लो वदन आंखें,
छोजी जाती जाति के ए सच्चे बलबूते हैं।
छाती से लगा लो कौन छूत इनमें ही लगी,
छूते क्यों नहीं हो ये अछूत तो अछूते हैं।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (मर्मस्पर्श)

अति

अति संघरपन जौ कर कोई।
अनल प्रगट चंदन ते होई॥

—तुलसीदास (मानस-उत्तरकाण्ड)

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। —जयशंकर प्रसाद

बहुधा अति से प्रतिक्रिया पैदा होती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, चाहे यह मौसम, मनुष्य अथवा शासन में हो।

—प्लेटो

स्नेह में, ज्ञान में और सुन्दरता में कभी अति नहीं होती, जबकि ये गुण पूर्णतया शुद्ध अर्थ में समझे जायें।

—एमर्सन

बहु सुन बहु रुचि बहु वचन, बहु अचार व्यवहार।
इनको भलो मनाइयो, यह अज्ञान अपार॥

—तुलसीदास (सतसई)

अति दरिद्रता भू-पथ की बाधा, अति वैभव भी उन्नतिहित बंधन
ज्ञान दग्ध आध्यात्मिकता शापित, शक्ति अंध भौतिकता मूर्त मरण!

—सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन)

प्रकृति का नियम यही है एक,
कि अति का होगा ही विध्वंस।

—रांगेय राघव (मेधावी)

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।
अतिदानाद्बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्॥

(अति सौन्दर्य के कारण सीता चुराई गई, अति गर्व के कारण रावण मारा गया, अति दान के कारण बलि को बँधना पड़ा, अति को सर्वत्र छोड़ देना चाहिए। —चाणक्य

अतिथि

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान सनमान।
घटत मान देखिए जबहिं, तुरतहिं करिय पयान॥

—रहीम

अकर्मण्य, बहुत खाने वाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान रखने वाले और निन्दित वेश धारण करने वाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दें।

—विदुर

समाज अव्यक्त है, अतिथि व्यक्त है। अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है।

—विनोबा भावे

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है, हमारी यह भावना होनी चाहिए।

—विनोबा भावे

प्रथम दिन अतिथि, दूसरे दिन भार और तीसरे दिन कंटक है।

—सेवोमा

आतिथेय से बड़ा अतिथि ही माना जाता,
आतिथेय ही सदा अतिथि को माथ नवाना।

—रामखेलावन वर्मा (चन्द्रगुप्त मौर्य)

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु भी भूखा न जाए॥

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

जिहि घर साधु न पूजिये, हरि की सेवा नाहिं।
ते घर मरघट सारपे, भूत बसैं तिन माँहि॥

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

जा दिन संत पाहुने आवत।
तीरथ कोटि स्नान करैं फल जैसो दरसन पावत॥

—सूरदास (सूरसागर)

अतीत

मैं ऐसे भविष्य की इच्छा नहीं रखती, जो अतीत से मेरा सम्बन्ध-विच्छेद कर दे।

—जार्ज इलियट

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं।

—प्रेमचन्द

भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन कीजिए।

—कनफ्यूशस

अतृप्त

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहार कर्मसु।
अतृप्ताः प्राणिन सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च ॥

(धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सब प्राणी अतृप्त होकर गए, जाते हैं और जायेंगे।)

—चाणक्य

पतंग की नक्षत्र के लिए इच्छा, निशा की दिवस के प्रति और अपनी पीड़ा से एक अज्ञान सुख की आकांक्षा, यही तो मानवी जीवन की चिर-अतृप्त आकांक्षा है।

—शैली

पक्षी चाहता है—"मैं बादल होता।"
बादल चाहता है—"मैं पक्षी होता।"

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आखिरी कविता)

अत्याचार-अत्याचारी

अत्याचार करने वाले भूल जाते हैं, किन्तु जिन पर अत्याचार होता है वे आसानी से नहीं भूल सकते। हाथ से मार गिराने पर भी वे मन-ही-मन डंक करते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कुमुदिनी)

अत्याचार-परायण राजसत्ता जब अपनी शक्ति बढ़ाती हुई अत्याचार की मात्रा बढ़ाती जाती है, तब उसकी गति को रोकना अनिवार्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में दल, बल और कौशल से काम लिए बिना काम नहीं चलता।

—अज्ञात

अनाचार और अत्याचार को चुपचाप सिर झुकाकर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है।

—अज्ञात

अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम खुली चुनौती है, जिसे वीर पुरुषों को स्वीकार करना ही चाहिए।

—अज्ञात

जुल्म और डर आपस में हाथ मिलाते हैं।

—बाल्ज़क

मनुष्य का मनुष्य के प्रति अत्याचार असंख्यों को पीड़ा में डाल देता है।

—रॉबर्ट बर्न्स

सारे अत्याचार क्रूरता एवं दुर्बलताओं से पनपते हैं।

—सेनेका

अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वरीय आदेश का पालन करना है।

—फ्रैंकलिन

जब प्रजा सिद्धान्त के लिए विद्रोह करती है तब राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है।

—बर्क

मनुज में शक्ति मनुज में भक्ति,
जनार्दन का जन है अवतार।
वही जन यदि ले मन में ठान,
ध्वस्त हो जाय अत्याचार॥

—बलदेव प्रसाद मिश्र (साकेत संत)

स्थिर, गम्भीर, चुप शांत न रह सकता है अत्याचारी,
करता रहता है विनाश की अपने आप तयारी।
अपना ही वह अविश्वास सबसे पहले करता है,
औरों के विश्वासघात से मूढ़ व्यर्थ डरता है।

—रामनरेश त्रिपाठी (पथिक)

अत्याचारी से बढ़कर भाग्यहीन कोई नहीं है, क्योंकि आपदा के समय उसका कोई सखा नहीं होता।

—शेख सादी (गुलिस्तां)

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से श्रेयस्कर है, सत्य तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही श्रेयस्कर है।

—शेख सादी (गुलिस्तां)

वह शासक अत्याचारी है जो स्वेच्छा के अलावा कोई नियम नहीं जानता।

—वाल्टेयर

अधर्म

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है, जहां झूठ पहुंच जाता है वहां अधर्म राज्य की विजय-दुन्दुभी अवश्य बजती है।

—सुदर्शन (पुष्पलता)

जो अधर्म करते हैं चाहे उन्हें उसका फल तत्काल न मिले पर धीरे-धीरे वह उनकी जड़ काट डालता है।

—वेदव्यास (महा० शा० प०)

जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप-रंग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है।

—स्वामी भजनानन्द

अधर्म साम्राज्य-लोलुपता की भाँति बर्बर और स्वार्थमय है।

—रस्किन

स्वयं को न्यायी दर्शाना, जबकि ऐसा न हो, सबसे बड़ा अधर्म है।

—प्लेटो

अधर्म की नींव पर खड़ा हुआ राज्य कभी नहीं टिकता।

—सेनेका

अधिकार

फिलॉसफी को अधिकार नहीं है कि वह गलत विचार प्रस्तुत करे, विज्ञान को अधिकार नहीं है कि वह गलत तथ्य उपस्थित करे।

—बर्नार्ड शॉ

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है।

—जयशंकर प्रसाद

संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं।

—प्रेमचन्द (गोदान)

अधिकार रूपी मदिरा का पान कर कौन है, जो चिरकाल तक उन्मत्त नहीं बना रहता।

—शुक्राचार्य (शुक्रनीति)

अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारों की जननी है।

—अज्ञात

नहर यह सोचना पसन्द करती है कि नदियाँ केवल उसे जल देने के लिए हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अधिकार भ्रष्ट करता है, पूरा अधिकार पूरे रूप से।

—लार्ड ऐक्टन

अधिकार विनाशकारी प्लेग के समान है। यह जिसे स्पर्श करता है, उसे ही भ्रष्ट कर देता है।

—शैली

अधिकार जताने से अधिकार सिद्ध नहीं होता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

विवाहित जीवन में अधिकार जमाने का प्रयत्न करते हुए स्त्री-पुरुष दोनों ही देखे जाते हैं। यह तो एक झगड़ा मोल लेना है।

—जयशंकर प्रसाद (तितली)

अधिकार,चाहे वे कैसे भी जर्जर और हल्की नीवके हों अथवा अन्याय ही से क्यों न सगठित हों, सहज में ही नहीं छोड़े जा सकते। भद्रजन उन्हें विचार से काम में लाते हैं और हठी तथा दुराग्रही उनमें तब तक परिवर्तन भी नहीं करना चाहते, जब तक वे एक बार ही न हटा दिये जायें।

—जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)

अधिकारों की सृष्टि
और उनकी यह मोहमयी माया
वर्गों की खाई बन फैली
कभी नहीं जो जुड़ने की।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

अधिकार और बदनामी का तो चोली-दामन का साथ है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अधिकार में स्वयं एक आनन्द है, जो उपयोगिता की परवाह नहीं करता।

—प्रेमचन्द (काया-कल्प)

अधिकार योग्यता का मुँह ताकते हैं। यही समझ लो कि इन दोनों में फूल और फल का सम्बन्ध है। योग्यता का फूल लगा और अधिकार का फल आया।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

अधिकार-प्रेम वृद्धजनों को कटु और कलहशील बना दिया करता है।

—प्रेमचन्द (बेटों वाली विधवा)

अगर मजदूरों के हाथों में अधिकार होता, तो मजदूरों के लिए स्त्री और शराब भी उतनी ही जरूरी सुविधा हो जाती जितनी कि विलासकों के लिए।

—प्रेमचन्द (गोदान)

जिस अधिकार को एक बार त्याग चुका, उसे बारम्बार बनाये रखने के प्रयास से बढ़कर विडम्बना और क्या होगी ?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विदा)

अधिकार की अपनी एक मर्यादा होती है, उस मर्यादा की रक्षा करने के लिए अधिकार प्रयोग को संयत रखना पड़ता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आँख की किरकिरी)

अधिकार न सीमा में रहते,
पावस निर्झर से वे बहते।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

जाको जहँ अधिकार न कोई। निकटहि वस्तु दूरि है सोई।
मीन कमल के ढिग ही रहै। रूप रंग रस मधुलिह लहै॥

—मंझन (मधुमालती)

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बधु का भी दंड देना धर्म है॥

—मैथिलीशरण गुप्त (जयद्रथ वध)

स्वल्पहु संधि-प्राप्त अधिकारा। करत सतत निज-पर उपकारा॥
रण उपलब्ध निखिल जग-राजू। करत विजेतहु केर अकाजू॥
पै हित-हानिहु ते बढ़िधर्मा। उचित न भयवश तजब स्वकर्मा॥

—द्वारका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

अध्ययन

सद्ग्रन्थ इस देश के चिन्तामणि हैं। उनके अध्ययन से सब कुचिन्ताएँ मिट जाती हैं। संशय-पिशाच भाग जाते हैं और मन में सद्भाव जाग्रत होकर परम शान्ति प्राप्त होती है।

—स्वामी शिवानन्द

अध्ययन उल्लास का, अलंकार का और योग्यता का कार्य करता है।

—बेकन

अध्ययन मनन और परिशीलन के लिए करना चाहिए।

—बेकन

जितना ही हम अध्ययन करते जाते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता है।

—शैली

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन से ज्यादा मानव श्रेष्ठ बने हैं।

—सिसरो

जब साहित्य पढ़ो तब पहले पढ़ो ग्रन्थ प्राचीन।
पढ़ना हो विज्ञान अगर तो पोथी पढ़ो नवीन॥

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नए सुभाषित)

विश्वविद्यालय ही देश के महापुरुषों का निर्माण करने वाला कारखाना है तथा अध्यापक उन्हें बनानेवाले कारीगर हैं।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अनाथ

तेरह-चौदह वर्ष के अनाथ बच्चों का चेहरा और मन का भाव लगभग बिना मालिक के राह के कुत्ते जैसा हो जाता है।

—रवीन्द्रनाथ टाकुर (छुट्टी)

अनाथ बच्चों का हृदय उस चित्र की भाँति होता है जिस पर एक बहुत ही साधारण परदा पड़ा हुआ हो। पवन का साधारण झकोरा भी उसे हटा देता है।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

जो जन हों असहाय अनाथ, रक्खो उनके सिर पर हाथ।
शिक्षित बनें अकिंचन बाल, निकलें वे गुदड़ी के लाल॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

अनादर

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किए। उपजै क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये॥

—तुलसी (मानस—उत्तरकाण्ड)

गुरुजनों का अनादर ही उनका वध कहलाता है।

—भगवान् कृष्ण (महाभारत)

अनादरपूर्वक जीवन से मृत्यु ही श्रेयस्कर है।

—सोफोक्लीज

अनासक्ति

आमं च छंदं च विगिंच धीरे !
तुमं चेव सल्लमाहट्टु ।

(हे धीर पुरुष ! आशा, तृष्णा और स्वच्छन्दता का त्याग कर। तू स्वयं ही इन कांटों को मन में रखकर दुखी हो रहा है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थइ,
एवं अत्तसमाहिए अणिहे ।

(जिस प्रकार अग्नि पुराने सूखे काठ को शीघ्र ही भस्म कर डालती है, उसी प्रकार सतत अप्रमत्त रहने वाला आत्मसमाहित निःस्पृह कर्मों को कुछ ही क्षणों में क्षीण कर देता है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था ।

(भगवान् ने सर्वत्र निष्कामता को श्रेष्ठ बताया है।)

—महावीर स्वामी (स्थानांग)

कन्नसोक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।

(केवल कर्णप्रिय तथ्यहीन शब्दों में अनुरक्ति नहीं रखनी चाहिए।)

—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ।

(जो व्यक्ति संसार की पिपासा-तृष्णा से रहित है, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

काम नियत्तमई खलु, संसारा मुच्चई खिप्प ।

(जिसकी मति, काम (वासना) से मुक्त है, वह शीघ्र ही संसार से मुक्त हो जाता है।)

—आचार्य भद्रबाहु (आचारांग निर्युक्ति

असंस्कृतान्नभुङ् मूत्रं बालादि प्रथमं शकृत्।

(संस्कारहीन अन्न खाने वाला मूत्रपान करता है, तथा जो बालक वृद्ध आदि से पहले खाता है, वह विष्टाहारी है।)

—विष्णु पुराण

निस्पृहस्य योगे अधिकारः।

(निस्पृह साधक का ही योग में अधिकार है।)

—यजुर्वेदीय उव्वट भाष्य

यथा स्वर्ग प्राप्तौ नाना भूताः प्रकाराः संति, न तथा मुक्तौ।

(जिस प्रकार स्वर्ग प्राप्ति के नाना प्रकार होते हैं, उस प्रकार मुक्ति के नहीं, अर्थात् मुक्ति का एक ही प्रकार है—अनासक्त प्रवृत्ति।)

—यजुर्वेदीय उव्वट भाष्य

आत्मानं च तेघ्नन्ति, ये स्वर्गप्राप्तिहेतूनि कर्माणि कुर्वन्ति।

(जो केवल (परलोक में) स्वर्गप्राप्ति के लिए कर्म करते हैं, वे अपनी आत्मा की हत्या करते हैं।)

—यजुर्वेदीय उव्वट भाष्य

निर्द्वन्द्वो निःस्पृहो भूत्वा विचरस्व यथा सुखं।

(निर्द्वन्द्व और निःस्पृह होकर आनन्द से विचरण करो।)

—शंकराचार्य (तत्त्वोपदेश)

कस्तरति कस्तरति मायाम्?

यः संगांस्त्यजति, यो महानुभावं सेवते, यो निर्ममोभवति।

—नारद भक्तिसूत्र

अनुकरण

मानव अनुकरणीय प्राणी है और जो सबके आगे बढ़ जाता है, वही समूह का नेतृत्व करता है।

—शिलर

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

(सज्जन जो कुछ आचरण करते हैं, उसीका अनुकरण अन्य लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुकरण करते हैं।)

—श्रीकृष्ण (गीता)

अंधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्म-संकोच होता है।

—अरविन्द घोष

अभी तक कोई भी मानव अनुकरण करके महान् नहीं बन सका है।

—सैमुअल जॉनसन

अनुकरण पूर्णतया निष्कपट चापलूसी है।

—कोल्टन

उपदेश की अपेक्षा कहीं अधिक अनुकरण करके ही हम सब-कुछ सीखते हैं।

—बर्क

अनुग्रह

अनुग्रह गुलामी है और गुलामी घृणास्पद है।

—हौल्ब

मानव न केवल अपनी सेवाओं का ही, अपितु अपने लिए भी भगवान् का ऋणी है।

—सीकर

किसी के अनुग्रह की याचना करना अपनी आज़ादी बेचना है।

—महात्मा गांधी

अनुभव

अनुभव गलतियों के लिए चुना गया एक नाम।

—ऑस्कर वाइल्ड

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछै बात।
सो गूंगा गुड़ खाइके, कहै कौन मुख स्वाद॥

—महात्मा कबीर

व्यथा और वेदना की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों तथा विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते।

—प्रभात

बिना ठोकर खाए आदमी की आँखें नहीं खुलतीं।

—प्रेमचन्द

ठोकर लगे और दर्द हो तभी मैं सीख पाता हूँ।

—महात्मा गांधी

कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है।

—महात्मा गांधी

अनुभव हमें विश्वास दिलाता है कि असत्य और हिंसा का परिणाम स्थायी कभी नहीं हो सकता।

—महात्मा गांधी

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है।

—विवेकानन्द

अनुभव वह कंघी है जो मिलती मनुष्य को,
सब जब हो चुकता उसका सिर पूर्ण साफ है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नए सुभाषित)

अनुभव बताता है कि आवश्यकता-काल में दृढ़ निश्चय पूरी सहायता करता है।

—शेक्सपियर

दूसरों के अनुभव जान लेना भी व्यक्ति के लिए एक अनुभव है।

—अज्ञात

अनुभव कठोर होते है और सांसारिक आन्दोलन से अनेक मायाजाल छिन्न हो जाते है। तब स्वच्छ आलोक में, मुक्त आकाश मे, अधिक स्पष्टतर रूप मे उसका परिचय होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आधुनिक काव्य)

सबसे बड़ा विश्वविद्यालय अनुभव है,
पर इसकी देनी पड़ती है फीस बड़ी।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नए सुभाषित)

अनुभूति

जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते हैं, वर्ष नहीं।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

ज्यों गूंगे के सैन को, गूंगा ही पहिचान।
त्यों ज्ञानी के सुक्ख को, ज्ञानी होय सो जान॥

—महात्मा कबीर

रस की अनुभूति जब प्रबल होती है तो वह हमारे मन मे समाती नहीं, बाहर छलक निकलती है। तब उसे हम प्रकट करना चाहते हैं नित्य काल की भाषा मे, कवि उस भाषा को मनुष्य की अनुभूति की भाषा कहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

कवि के चित्त मे जो अनुभूति गहरी होती है, वह भाषा मे सुन्दर रूप लेकर अपनी नित्यता को प्रतिष्ठित करना चाहती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आधुनिक काव्य)

बाहर की अनुभूति जितनी प्रबल होती है अन्तरात्मा मे सत्ताबोध को भी उतना ही बल मिलता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य तत्त्व)

अनुशासन

अन्न देइ सीख देइ राखि लेइ प्राण जात।
राज बाप मोल लै करै जु पोषि दीह गात॥
दास होय पुत्र होय शिष्य होय कोइ माइ।
शासना न मानई तो कोटि जन्म नर्क जाइ॥

—आचार्य केशव (रामचन्द्रिका)

अन्न

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्ष्यते नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥

(दीपक अन्धकार को खाता है और काजल को जन्म देता है। प्राणी जैसा अन्न खाता है उसकी वैसी ही सन्तति होती है।)

—चाणक्य

अन्नं वै प्राणाः।
(अन्न ही हमारे प्राण हैं।)

—वेद

कलावन्नगताः प्राणाः।
(कलियुग में प्राण अन्न के ही अधीन हैं।)

—[illegible]

अन्न पर स्वत्व है भूखों का, और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। [illegible]
ति से उन्हें भूखों के लिए रख छोड़ा है। वह उनकी थाती है।

—जयशंकर प्रसा[illegible]

बच्चे, बूढ़े और सबई जो भी काम कर सकें, वह काम उनसे लेक[illegible]
है रोटी देनी चाहिए। इससे श्रम की पूजा होती है और अन्[illegible]
ी भी।

—विनोबा भा[illegible]

अनुराग

विश्व में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है, जब तक विश्व से हम अनुराग रखते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (स्ट्रेट बर्ड्स)

अनुराग यौवन, रूप या धन से नहीं उत्पन्न होता। अनुराग अनुराग से उत्पन्न होता है।

—प्रेमचन्द (ग़बन)

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून।
ज्यों हरदी हरदी तजी, तजी सफेदी चून॥

—रहीम

जान परे जल जान वहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़ति छोह॥

—रहीम (रहिमन विलास)

अनुराग का बुद्धि, अनुभव या तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो युवावस्था की दुनिया में मस्त बहती हुई बयार है।

—प्रसाद

विश्व में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है, जब तक विश्व से हम अनुराग रखते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (स्ट्रेट-बर्ड्स)

अनुराग तो जवानी की दुनिया में मस्त बहती हुई बयार है, मगर वह कभी मिट सकती है।

—शरण (सोनामाटी)

यदि राज-शक्ति के केन्द्र में ही अन्याय होगा, तो समग्र राष्ट्र अन्यायों का क्रीड़ा-स्थल हो जाएगा।

—जयशंकर प्रसाद

अन्याय सहने से अन्याय करना अधिक अच्छा है, कोई भी इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करेगा।

—अरस्तू

क्या अन्याय का प्रतिफल अन्याय है ?

—जयशंकर प्रसाद (विशाख)

अन्याय सह लेना अन्याय करने से तो अच्छा है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

कोई अन्याय केवल इसलिए मान्य नहीं हो सकता कि लोग उसे परम्परा से सहते आए हों।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

अन्याय अन्याय ही है, चाहे कोई एक आदमी करे या स्त्री-जाति करे। दूसरों के भय से किसी पर अन्याय नहीं करना चाहिए।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

विदेशियों के हाथों में अन्याय का यंत्र बनकर जीवित रहने से तो मर जाना ही उत्तम है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अन्याय सह लेने वाला भी अपराधी होता है। यदि वह न सहा जाए तो फिर कोई किसी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार कर ही नहीं सकेगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

जहाँ अन्तर में कोई अन्याय छिपा हो, वहाँ बाहर शांति होने पर भी अमंगल की आग सुलगती रहती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

अन्याय सहने वाले की अपेक्षा अन्याय करने वाला ज्यादा दुखी होता है।

—प्लेटो

अन्वेषक

अन्वेषक में दृढ़ आस्था होनी चाहिए, विराग नहीं।

—बर्नार्ड शॉ

अपकार

दूसरों का अपकार सोचने से अपना हृदय भी कलुषित होता है।

—जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)

अपकीर्ति

सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।
(सम्मानित पुरुष के लिए अपकीर्ति मरण से भी बुरी है।)

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम्।
(मृत्यु क्या है? अपनी अपकीर्ति।)

—स्वामी शंकराचार्य

अपनी अपकीर्ति का दायित्व हमारे पर है।

—जे० बो० हार्नेड

अपकीर्ति दंड में नहीं, बल्कि अपराध में है।

—एलफिरी

अपकीर्ति अमर है और जब कोई उसे मरा हुआ समझता है, तब भी वह जिन्दा रहती है।

—प्लूटस

अपना-पराया

को चाहे अपनो तऊ जा संग लहियै पीर।
जैसे रोग सरीर तैं उपजत दहत शरीर।।

—वृन्द (सतसई)

अपने को दूसरा न देख,
दूसरे को अपना न कह।
सपने को कल्पना न मान,
कल्पना को सपना न कह।।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (बेला)

वरं प्राणपरित्यागो मान भंगेन जीवनात्।
प्राण त्यागे क्षणं दुःख मान भंगे दिने-दिने।।

(मानरहित जीवन से तो प्राण-त्याग श्रेष्ठ है। प्राण-त्याग में पल-भर के लिए दुःख होता है, मानरहित होने पर प्रतिदिन।)

—चाणक्य

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।।

(जो धूलि पद से आहत होने पर उड़कर (आहत करने वाले के) सिर पर चढ़ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहने वाले देहधारी मानव से श्रेष्ठ है।)

—माघ (शिशुपाल वध)

मातरं पितरं विप्रमाचार्यं चावमन्य वै।
स पश्यति फलं तस्य प्रेत राजवशं गतः।।

(जो माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है वह यमराज के वश में पड़कर उस पाप का फल भोगता है।)

—वाल्मीकि (रामायण)

अपमान

अपमान अन्याय से अच्छा है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अपमान को निगल जाना चरित्र-पतन की अंतिम सीमा है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जद्यपि जग दारुन दुःख नाना। सब ते कठिन जाति अपमाना।

—तुलसीदास (मानस-बालकाण्ड)

पवित्र नारी का अपमान विश्व में क्रान्ति का अग्रदूत है।

—अज्ञात

ठोकर खाकर सांप जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देता है।

—अज्ञात

अपमान का भय कानून के भय से किसी तरह कम क्रियाशील नहीं होता।

—प्रेमचन्द

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पों का उपहार देती है।

—रवीन्द्रनाथ टागुर

अपमान के घूंट पी-पीकर जिसने पेट भरा है उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्त्व ही निकलते रहेंगे।

—अज्ञात

अपमानपूर्वक सहस्रों वर्ष जीवित रहने की अपेक्षा सम्मानसहित एक घड़ी भर जीवित रहना अच्छा है।

—धम्मसंत

पुरुष का अपमान एक साधारण बात है। स्त्री का अपमान करना, आग में कूदना है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, साहित्य और बदले में वह पुष्पों का उपहार देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

अपमान के हल्के झोंके से ही उसका गर्व दावाग्नि बनकर वैभव के नन्दन वन को भस्म करने लगा था।

—शरण (सोना माटी)

अपयश

अपयश मिलता है अपभाग्य से
तदपि तू डर कुत्सित कर्म से।
हृदय ! देख कलंकित विश्व में,
विबुध भी बुध भी विधि से हुए॥

—रामचरित उपाध्याय (विधि विडम्बना)

नासि कीर्तिकुल, लहि अयश, धारत जे जग प्राण।
अधम श्वान सम ते मनुज, जीवित मृतक समान॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

और आप जानते हैं, सम्भावित व्यक्ति को,
थोड़ी भी अकीर्ति मृत्यु-कष्ट से अधिक है।

—डॉ० रामकुमार वर्मा (एकलव्य)

अपमान

अपमान अन्याय से अच्छा है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अपमान को निगल जाना चरित्र-पतन की अन्तिम सीमा है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जद्यपि जग दारुन दुख नाना। सब ते कठिन जाति अपमाना।

—तुलसीदास (मानस-बालकाण्ड)

पवित्र नारी का अपमान विश्व में क्रान्ति का अग्रदूत है।

—अज्ञात

ठोकर खाकर सांप जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देता है।

—अज्ञात

अपमान का भय कानून के भय से किसी तरह कम क्रियाशील नहीं होता।

—प्रेमचन्द

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पों का उपहार देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अपमान के घूंट पी-पीकर जिसने पेट भरा है उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्व ही निकलते रहेंगे।

—अज्ञात

अपमानपूर्वक सहस्रों वर्ष जीवित रहने की अपेक्षा सम्मानसहित एक घड़ी भर जीवित रहना अच्छा है।

—एमर्सन

पुरुष का अपमान एक साधारण बात है। स्त्री का अपमान करना, आग मे कूदना है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, साहित्य और बदले मे वह पुष्पो का उपहार देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

अपमान के हल्के झोंके से ही उसका गर्व दावाग्नि बनकर वैभव के नन्दन वन को भस्म करने लगा था।

—शरण (सोना माटी)

अपयश

अपयश मिलता है अपभाग्य से
तदपि तू डर कुत्सित कर्म से।
हृदय! देख कलंकित विश्व मे,
विबुध भी बुध भी विधि से हुए॥

—रामचरित उपाध्याय (विधि विडम्बना)

नासि कीतिकुल, लहि अयश, धारत जे जग प्राण।
अधम श्वान सम ते मनुज, जीवित मृतक समान॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

और आप जानते हैं, संभावित व्यक्ति की,
थोड़ी भी अकीति मृत्यु-कष्ट से अधिक है।

—डॉ॰ रामकुमार वर्मा (एकलव्य)

अपराध

अपराध मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है।

—महात्मा गांधी

आत्म-सेवा से बड़ा दूसरा अपराध नहीं।

—प्रेमचन्द (गोदान)

अपराध की सहस्र जिह्वाएँ हैं, जो अग्नि-शिखा की भाँति चंचल हो सकती हैं।

—प्रसाद

छिपकर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में काँटे की तरह चुभता रहता है।

—प्रसाद

जिह्वा के बिना भी अपराध बोलेगा।

—शेक्सपियर

अपराधी अपने अतिरिक्त सभी को दोषी ठहराता है। हम सब उसी प्रकार के हैं। मानव-वृत्ति इसी प्रकार कार्य करती है।

—डेल कार्नेगी

अपराध करने के पश्चात् डर पैदा होता है और यही उसका दण्ड है।

—वाल्टेयर

संसार में अपराध करके प्रायः मनुष्य अपराधों को छिपाने की चेष्टा नित्य करते हैं। जब अपराध नहीं छिपते तब उन्हें ही छिपना पड़ता है।

—जयशंकर प्रसाद (तितली)

अपराध करने में और दंड देने में मनुष्य एक-दूसरे का सहायक होता है।

—जयशंकर प्रसाद (आँधी)

अपराध को अनेक लोग मिलकर खड़ा करते हैं। परन्तु प्रायश्चित्त [illegible] को ही करना पड़ता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

विश्व में यदि अपराध ही होना है, तो अपराध की केवल वांछना ही क्यों भोगी जाय, उसका जो सुख है क्यों नहीं भोगा जाय ?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आँख की किरकिरी)

अपराधी

हिलते हुए दाँतों से किसी वस्तु को चबाने मे जो पीड़ा होती है, उसमे सब दाँतों का कोई अपराध नही है। उसके लिए तो हिलता हुआ दाँत ही अपराधी है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

श्रेष्ठता का पूरा आदर्श अपराधियों में भी कठिनाई से पाया जाता है। चोर को भी सर्वश्रेष्ठ चोर बनाने मे प्रकृति कंजूसी किया करती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जासूस)

माता, पिता, गुरहु किन होई। दंडनीय अपराधी जोई॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

अपरिग्रह

बहुंपि लद्धुं न निहे,
परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्जा।

(अधिक मिलने पर भी संग्रह न करे। परिग्रह-वृत्ति से अपने को दूर रखे।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

परिग्गह निविट्ठाणं, वेरं तेसि पवड्ढई।

(जो परिग्रह मे व्यस्त हैं, वे संसार में अपने प्रति वैर ही बढाते हैं।)

—महावीर स्वामी (सूत्र कृतांग)

लोभ-कलि-कसाय-महक्खंधो,
चिंतासयनिचियविउलसालो।

(परिग्रह रूप वृक्ष के तने हैं—लोभ, क्लेश और कषाय। चिंता रूपी सैकड़ों ही सघन और विस्तीर्ण उसकी शाखाएँ हैं।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सव्वजीवाण सव्वलोए।

(सारे जगत् में परिग्रह के समान प्राणियों का [illegible] करने वाली है।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

अपरिग्गहसंवुडेणं लोगंमि विहरियव्वं।

(अपने को अपरिग्रह भावना से संवृत कर लोक में विचरण करना चाहिए।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो।

(मूर्च्छा को ही वस्तुतः परिग्रह कहा है।)

—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

अपरिग्गहो अणिच्छो भणि दो।

(वास्तव में अनिच्छा को ही अपरिग्रह कहा है।)

—आचार्य कुंदकुंद (समयसार)

गाहेण अप्पगाहा, समुद्दसलिले सचेल अत्थेण।

(ग्राह्य वस्तु में से भी अल्प ही ग्रहण करना चाहिए। जैसे सागर के अथाह जल में से अपने वस्त्र धोने के योग्य अल्प ही जल ग्रहण किया जाता है।)

—आचार्य कुंदकुंद (सूत्रपाहुड)

अत्थो मूलं अणत्थाणं।

(अर्थ अनर्थों का मूल है।)

—मरण समाधि

गंथोऽगंथो व मओ मुच्छा मुच्छाहि निच्छयओ।

(निश्चय दृष्टि से विश्व की प्रत्येक वस्तु परिग्रह भी है और अपरिग्रह भी। यदि मूर्च्छा है तो परिग्रह है, मूर्च्छा नहीं है तो परिग्रह नहीं है।)

—विशेषावश्यक भाष्य

आरम्भपूर्वको परिग्रहः।

(परिग्रह बिना हिंसा के नहीं होता।)

—सूत्रकृतांग चूर्णि

अबला

सत्ता हो समाज की है, वह जो करे करे;
एक अबला का क्या, जिये-जिये, मरे-मरे॥

—मैथिलीशरण गुप्त (नहुष)

नहीं जानते तुम कि देखकर निष्फल अपना प्रेमाचार।
होती हैं अबलाएँ कितनी प्रबलाएँ अपमान विचार॥

—मैथिलीशरण गुप्त (पंचवटी)

अबला जीवन, हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

—मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा)

का नहिं पावक जारि सकै, का न समुद्र समाय।
का न करै अबला प्रबल, किहि जग काल न खाय॥

—जोधराज (हम्मीर रासो)

अभय

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं ।
(अभयदान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।)
—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

ण भाइयव्वं, भीत खुभया अइति लहुयं ।
(भय से डरना नहीं चाहिए। भयभीत मनुष्य के पास भय शीघ्र आते हैं।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

भीतो अवितिज्जओ मणुस्सो ।
(भयभीत मनुष्य किसी का सहायक नहीं हो सकता।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

भीतो भूतेहिं घिप्पइ ।
(भयाकुल व्यक्ति ही भूतों का शिकार होता है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरणसूत्र)

भीतो अन्नं पि हु भेसेज्जा ।
(स्वयं भयभीत व्यक्ति दूसरों को भी भयभीत कर देता है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

भीतो तवसंजमं पि हु मुएज्जा ।
भीतो य भरं न नित्थरेज्जा ॥
(भयभीत व्यक्ति तप और संयम की साधना छोड़ बैठता है। भयभीत किसी भी गुरुतर दायित्व को नहीं निभा सकता है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

ण कुणइ अवराहे, सो गिस्संकोइ जगत्तए ममदि ।
...का अपराध नहीं करता, वह अभय होकर जगत्‌ में ... है। इसी तरह निरपराध भी सब जगह निर्भय होकर

अभागा

अभागा वह है जो संसार के सबसे पवित्र धर्म कृतज्ञता को भूल जाता है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

अभागा मनुष्य देवता का प्रसाद प्राप्त करके भी दुःखदायक पापकर्म में प्रवृत्त हो जाता है।

—वेदव्यास (महाभारत)

अभाव

जो अभाव है उसको जब तक हम अनुभव नहीं करते तब तक आराम से निःसंशय रहते हैं और इस छलपूर्ण विश्व में पाप करते हुए सोचते हैं कि हम ईश्वर के विशेष अनुग्रह पात्र हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अभाव)

हृदय की प्रचुरता नित्य अभाव का सृजन करेगी।

—जयशंकर प्रसाद (कामना)

अभिभावक

अभिभावक होने योग्य मनुष्य वही है जिन्हें कवि कला-कौशल में घट से ठग नहीं सकें और जो इंगित से ही समझ जायें कि वस्तु कहाँ है और कहाँ नहीं है?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अभिभावक)

अभिमान

अभिमान भी इतना मीठा होता है। जीवन में उसके स्वाद को उस दिन सबसे पहले उपलब्ध करके मैं बच्चे की तरह एकांत में बैठ गया और लगातार चबा-चबाकर उसका उपभोग करने लगा।

—शरत्चन्द्र (श्रीकान्त-पर्व १)

हम गंगोदक, हम गगन, हम दीपक, हम भान।
यही तुम्हें लै बूड़ि है कुल-कोरी-अभिमान॥

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

तुम जो देते हो मानवता को आठों याम चुनौती,
तुम महल खजानों को जो अपनी समझे हुए बपौती।
तुम कल बनकर राज-कण पैरों से ठुकराये जाओगे,
है कौन यहाँ पर ऐसा जो ला आया हो अमरौती॥

—भगवतीचरण वर्मा (रंगों से मोह)

अभिलाषा

जिसकी हम इच्छा करते हैं, जिसकी सिद्धि हेतु हम सम्पूर्ण अन्तःकरण से अभिलाषा करते हैं, उसकी प्राप्ति हमें अवश्य होगी।

—स्वेट मार्डन

पवित्र और दृढ़ अभिलाषा सर्वशक्तिमान् है।

—स्वामी विवेकानन्द

अभिलाषा ही घोड़ा बन सकती तो हर मानव घुड़सवार हो जाता।

—शेक्सपियर

समस्त भय और चिन्ता इच्छाओं का फल है।

—स्वामी रामतीर्थ

अभिलाषा की पिपासा कभी नहीं बुझती, न पूरे तौर पर सन्तुष्ट होती है।

—सिसरो

जिस अभिलाषा में शक्ति नहीं उसकी पूर्ति असम्भव है।

—प्रसाद

[illegible] पैदा कर सकती है, जब वह दृढ़ निश्चय का
[illegible] लेती है।

—स्वेट मार्डन

अभिलाषाओं को शांत करने से नहीं, बल्कि उन्हें परिमित करने से शान्ति प्राप्त होती है। —हेवर

विजयों की सीमा है; परन्तु अभिलाषाओं की नहीं। —जयशंकर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

जिसकी आप अपने अन्तःकरण से अभिलाषा करते हैं वह आपको अवश्य ही मिलेगा। जिसको आपने मन, कर्म और वचन से अपना आदर्श माना है, वह आपके सामने अवश्य ही प्रकट होगा। —स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट)

आपकी सबसे बड़ी अभिलाषा यह होनी चाहिए कि आप अपने मनुष्यत्व का विकास करें, अपने जीवन को सुन्दर एवं ऐश्वर्यशाली बनाएँ और अपना अधिकाधिक समय मानवीय गुणों को संगठित करने में ही व्यतीत करें। —स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट)

अभ्यास

करत-करत अभ्यास कें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान॥
—वृन्द (सतसई)

मानव मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। —बेकन

अमरता

अमरता लाभ पाने की एक विशेष अवस्था है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर (फल)

अमितव्ययी

जो व्यक्ति अमितव्ययी है वह विश्व की पीड़ा हरने के लिए दान करके अपने को निर्धन बनाता है, यह बात नहीं है, किन्तु वह व्यय करने की प्रवृत्ति को संवरण नहीं कर पाता। नाना प्रकार से व्यय करके उसका उद्यम मुक्त होकर पीड़ा में आनन्द पाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अन्दर-बाहर)

अमृत

अमृत मृत्यु के वक्ष को विदीर्ण करके उसे उत्साहित करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विशेष)

जो आदमी हमेशा अमृत ही अमृत पीता है उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि ज़हर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूँदें।

—महात्मा गांधी

बाजीगर के खेलों जैसे, जीवन बाँटे जा न सकेंगे।
वे अमृत कैसे पायेंगे, जो विष घट अपना न सकेंगे॥

—माखनलाल चतुर्वेदी (वेणु लो गूँजे धरा)

अवगुण

गुण भी इस जगत् में दुर्जनों के अपवाद से अवगुण समझे जाते हैं।

—अज्ञात

मदिरापान करना अवगुण की अपेक्षा बीमारी अधिक है।

—महात्मा गांधी

यदि शासक किसी अवगुण को पसन्द करे तो वह गुण हो जाता है।

—सादी

अवगुण का पथ चिकना ही नहीं, बल्कि ढालू भी है।

—सेनेका

अवतार

हर व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रकट होहि मैं जाना।

—तुलसीदास (मानस)

मोक्षप्राप्ति के समीप पहुँची हुई आत्मा अवतार रूप है।

—महात्मा गांधी

जो अपने कर्मों को ईश्वर का कर्म समझ कर सकता है, वही ईश्वर का अवतार है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं॥
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

(जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ। साधुओं की रक्षा हेतु, पापियों के नाश हेतु और धर्म की स्थापना हेतु मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ।)

—श्रीकृष्ण (गीता)

अवसर

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय विचारि।
सबको मन हर्षित करे, ज्यों विवाह में गारि॥

—वृन्द

अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरि दिए का लाख।
दुइज न चन्दा देखिए, उदौ कहा भरि पाख॥

—तुलसीदास (दोहावली)

अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद नहीं करते।

—सेनेका

मानव के सब व्यवहारों में ज्वार-भाटा का-सा चढ़ाव-उतार होता है। यदि मानव बाढ़ को पकड़े तो भाग्य के द्वार पर पहुँच जाए।

—शेक्सपियर

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात॥

—वृन्द

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक।
सदा विचारहि चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक॥

—तुलसीदास (दोहावली)

तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुँए करइ का सुधा तड़ागा।
का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि का पुनि पछताने॥

—तुलसीदास (मानस-बालकाण्ड)

अवसर योग्य के पक्ष में लड़ता है।

—यूरीपेडीज

ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार पुनः खटखटायेगा।

—शॉम्फोर्ट

समय और उचित अवसर पर कहा गया एक शब्द युगों की बात है।

—कार्लाइल

दीबो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो, घन को कौने काम॥

—वृन्द (सतसई)

बिन औसर न सुहाइ तन, चंदन ल्यावै गार।
औसर की नीकी लगै, मीठी सी गी गार॥

—रसनिधि (सतसई सप्तक)

अविश्वास

अविश्वास से बढ़कर एकाकीपन कोई अन्य नहीं है।

—जार्ज इलिएट

दरिद्रता और लगातार दुःखों से मनुष्य अविश्वास करने लगता है, यह कोई नई बात नहीं है।

—जयशंकर प्रसाद (आंधी)

एक बार अविश्वस्त ठहराये गए का कदापि विश्वास न करो।

—पंचतन्त्र

विश्वास करना एक गुण है। अविश्वास दुर्बलता की जननी है।

—महात्मा गांधी

अविश्वास, बस अविश्वास ही इस दुनिया का मंत्र बना है।
भाई भाई मे दो टुकडो पर भीषणतम युद्ध ठना है॥
मानवता बेचारी रोती बात-बात पर शस्त्र तना है।
व्यवहारों के भीतर देखो कृत्रिमता का रंग कितना है॥

—हरिकृष्ण प्रेमी (अग्निगान)

अशांति

अशान्ति के बिना शान्ति नहीं मिलती। लेकिन अशान्ति हमारी अपनी हो। हमारे मन का जब खूब मन्थन हो जाएगा, जब हम [illegible] अग्नि में खूब तप जाएँगे, तभी हम [illegible]

असंतोषी से आनन्द दूर रहता है।

—प्रसाद

असंतुष्ट इन्सान दिल में ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहते।

—शेक्सपियर

शान्तिमय प्रासादों में रहने से अधिक सुख एवं संतोष मिलता है; किन्तु असंतोषी मानवों के निर्मित प्रासादों में सुख नहीं है।

—एमर्सन

असफलता

असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है।

—साउथ

वे कभी असफल नहीं होते जिनकी मौत महान उद्देश्य के लिए होती है।

—बायरन

जितनी बार हमारा पतन हो उतनी बार उठने में गौरव है।

—महात्मा गांधी

असफलता के दृष्टिकोण से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना कीकर के वृक्ष से गुलाब के पुष्प का विकसित होना।

—स्वेट मार्डेन

असम्भव

असफलता की भावना से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना कि बबूल के वृक्ष से गुलाब के फूल का निकलना।

—बायरन

भीरु और संशयशील मनुष्यों के लिए हर चीज असम्भव है; क्योंकि उसे ऐसी ही प्रतीत होती है।

—वाल्टर स्काट

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता
भूपे सख्यं केन दृष्टं श्रुतं वा।

(कौवे में पवित्रता, जुआरी में सच्चाई, सर्प में क्षमा, स्त्रियों में काम की शान्ति, भीरु में धैर्य, मदिरा पान करनेवाले में तत्व का विचार और राजा में मैत्री का होना किसने देखा अथवा सुना है।

—अज्ञात

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता एक ऐसा सर्प है जिसके सहस्र मुख हैं और जिसके प्रत्येक मुख में जहरीले दांत दिखाई पड़ते हैं। यह इतनी विस्तृत है कि इसकी परिभाषा नहीं की जा सकती। यह इतनी जबरदस्त है कि इसे अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए मनु अथवा प्राचीन स्मृतिकारों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

—महात्मा गांधी

शरीर किसी का हो स्पष्टतः गन्दगी की गठरी है और आत्मा तो सर्वत्र एक और अत्यन्त शुद्ध है। ऐसी स्थिति में अस्पृश्यता किसकी और किसके लिए ?

—विनोबा भावे

जिस प्रकार उँगली से कुत्ते को स्पर्श करके भी अपवित्रता की मन में शंका तक हम नहीं करते, उसी प्रकार शुद्ध अन्तःकरण से यदि हम अपने बीज, धर्म, एक राष्ट्र के सहोदर भाइयों को उन सभी अस्पृश्यों को स्पृश्य बनाकर अत्यन्त सहज भावपूर्वक सफलता से इस अस्पृश्यता को निकाल बाहर करें और इस प्रकार अस्पृश्यता की बेड़ी को तोड़ दें तो उन तीन-चार करोड़ धर्म-बन्धुओं को कौन-सा मनु हमसे अलग कर पाएगा ?

—विनायक दामोदर सावरकर

स्पृश्य-अस्पृश्य यह विघटन—यह विभाग ही कच्चे धागे के समान उंगली से छूते ही चट से नामशेष हो जाएगा।

—विनायक दामोदर सावरकर

अस्पृश्यता हमारे देश और समाज के मस्तक पर कलंक है। यह एक बहुत ही गम्भीर और जटिल प्रश्न है। हमारे अपने ही हिन्दू समाज के, धर्म के, राष्ट्र के सात करोड़ हिन्दू बन्धु अभी तक इससे अभिशप्त हैं।

—विनायक दामोदर सावरकर

अस्पृश्यों की अपवित्रता जो केवल मानी हुई पुस्तकों में वर्णित है, वह मानवता का एक कलंक है।

—विनायक दामोदर सावरकर

जिस क्षण हाथ बढ़ाकर अस्पृश्य का स्पर्श किया, समझो उसी क्षण यह समस्या (अस्पृश्यता) सदा-सदा के लिए हल हो गई।

—विनायक दामोदर सावरकर

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं और यदि वह बन्द हो जाए तो परमेश्वर नहीं, ऐसा मैं मानता हूँ।

—लोकमान्य तिलक

अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर एक लज्जाजनक कलंक है। हिन्दू-जाति जब तक इसे मिटाने में सफल नहीं होती, हिन्दू-धर्म खतरे में है।

—महात्मा गांधी

जितनी अधिक छुआछूत हम व्यवहार में लाएँगे, हमें उतने ही अधिक टैक्स अदा करने पड़ेंगे।

—काका कालेलकर

अस्पृश्यता की खोज करने के लिए पास का अपना हृदय छोड़कर योग-शास्त्र तक दौड़ने की क्या जरूरत है?

—विनोबा भावे

अहंकार—अहंकारी

अहंकार होता न तो, हरता कौन विकार।
कर रग-रग के रुधिर में, रुधिर ओज संचार॥
सजीवता ओजस्विता, आवश्यक सत्कर्म।
क्यों पाते जो समझता, अहंकार नहिं मर्म॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ह० सतसई)

अहंकार ने ही मचाया है हाहाकार।
मदांधता ने ही किया, है बहु अत्याचार॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ह० सतसई)

बोल रहा या तीर ज़हर के पैने छोड़ रहा है।
समझ रहा है जैसे सारे जग को मोड़ रहा है॥
हर चिड़ी यह माना करता आसमान है उस पर।
औ हर साँप मारता जैसे जड़ी हुई मणि फन पर॥

—उदयशंकर भट्ट (वर्णिका)

अहंकार आत्म के बचाव का ज़रिया है वह अपनी हीनता के दबाव से बचने के प्रयत्न का स्वरूप है। उसमें व्यक्ति अपने में ही उभरा हुआ दीखना चाहता है।

—जैनेन्द्र (ये और वे—निबन्ध)

मानव जितना ही छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।

—वाल्टेयर

दम्भ और अहंकार से पूर्ण मनुष्य अदृष्ट शक्ति के क्रीड़ा-कन्दुक हैं।

—जयशंकर प्रसाद (जन्मेजय का नागयज्ञ)

अहं की भावना रखना एक अक्षम्य अपराध है।

—प्रकाश

अहंकार मदों का मुख्य रूप है।

—प्रेमचन्द

धनी को अपने धन का मद रहता है, घमंड रहता है परन्तु गरीब के झोंपड़े में क्रोध और अहंकार के लिए स्थान नहीं रहता।

—प्रेमचन्द

घोड़े और हाथी के लिए यथासाध्य चारा चाहिए, किन्तु अहंभाव के लिए किसी रसद की आवश्यकता नहीं होती।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

निरहंकारिता से सेवा की कीमत बढ़ती है और अहंकार से घटती है।

—विनोबा भावे

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहिं जाए।
जेहि मानै मुनिवर ठगे, मान सबन को खाय॥

—महात्मा कबीर

अहंकार चुम्बक की तरह हमेशा एक ही चीज का निर्देश करता है—स्व का; लेकिन चुम्बक की तरह वह अपनी ओर आकर्षित नहीं करता, अपितु अपने से दूर हटा देता है।

—कोल्टन

अहंकारी मानव में कृतज्ञता बहुत थोड़ी होती है।

—एच० डब्ल्यू० बीचर

इस जीवन का जो भोग किया है, अहं को उसका भाड़ा स्वरूप मृत्यु के हाथ में देकर, हिसाब चुकाकर जाना होगा। वह किसी प्रकार भी संग्रह की वस्तु नहीं है।

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नाव की लड़ाई)

अहं का धर्म ही संग्रह करना है, संचय करना है, वह केवल लेता ही रहता है।

अहं केवल अहंकार के विसर्जन करने के लिए ही होता है।

अहं हमारे लिए वह घट है, वह डाली है। उसके वेष्टन में जो आ पड़े उसे ही 'अपना' कहने का अधिकार हो जाता है। एक बार उसे वह अधिकार प्राप्त हुए बिना दान का अधिकार नहीं मिलता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अहं)

है स्वकीय अहिंसा शुद्ध, किन्तु जगत है शुद्ध न बुद्ध।
यह है जीवन-युद्ध क्षेत्र, सभी किन्तु बन कर दृढ़ वेर॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

न छीनिए जीवन प्राणवान का, न दे सकोगे नव प्राण जीव को।
धरित्रि है जीवन के लिए सदा, यहाँ सभी के अधिकार तुल्य हैं॥

—अनूप (वर्द्धमान)

अहिंसा का मतलब इतना ही नहीं है कि हम किसी का बुरा नहीं चाहेंगे और नहीं करेंगे। नहीं, बल्कि हर किसी का भला सोचेंगे और वह भला करने के लिए आगे बढ़ेंगे।

—जैनेन्द्र (पूर्वोदय)

जो अहिंसा की ध्वजा उद्‌घोष के साथ फहराता है, वह अहिंसा की दुकान चलाता है, वह अहिंसक नहीं है।

—जैनेन्द्र (प्रस्तुत प्रश्न)

व्यावहारिक सच्चाई एक है, वह अटूट है, निरपवाद है। वही अहिंसा है।

—जैनेन्द्र (प्रस्तुत प्रश्न)

अहिंसा से मोक्ष के बजाय अहिंसा में मोक्ष है।

—जैनेन्द्र (इतस्तत)

अहिंसा की हार इसी में होती रही है कि वह व्यक्तिगत दायरे में अपना संतोष और मोक्ष खोजती है।

—जैनेन्द्र (श्रेय और प्रेय)

अहिंसा में ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा-सा मार्ग दिखाई देता है।

—महात्मा गांधी

अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगी का एक रास्ता है।

—महात्मा गांधी

अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना।

—महात्मा गांधी

मनुष्य-व्यवहार में ही अहिंसा की कसौटी होती है।

—महात्मा गांधी

अहिंसा का मार्ग तलवार की धारपर चलने वाला है, जरा भी गफलत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करनेवाले पर भी गुस्सा न करें, बल्कि उससे प्रेम करें, उसका भला चाहें और करें। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्याय के वश में न हों। अन्याय का विरोध करें और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्यायी के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह लें।

—महात्मा गांधी

अहिंसा प्रचण्ड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है, वह भीरू से दूर भागती है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। वह शुष्क, नीरस जड़ पदार्थ नहीं है। वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है।

—महात्मा गांधी

अहिंसा की शक्ति अमाप है।

—महात्मा गांधी

अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सतायें उनके लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने ईश्वर पिता के पुत्र कहला सको।

—महात्मा ईसा

'इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च।
अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते॥

(इन्द्रियों के निग्रह से, रागद्वेष को विनष्ट करने से और प्राणी मात्र के प्रति अहिंसक रहने से साधक अमृतत्व के योग्य होता है अर्थात् अमरत्व प्राप्त करता है।)

—मनुस्मृति

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।

(अहिंसा की प्रतिष्ठा (पूर्ण स्थिति) होने पर उसके सान्निध्य में सब प्राणी निर्वैर हो जाते हैं।)

—योग दर्शन

जो तुम्हारे बायें गाल मारे उसकी ओर दायां गाल भी कर दो।

—महात्मा गांधी

यदि सत्य नहीं तो अहिंसा की रक्षा नहीं हो सकती।

—विनोबा भावे

अदण्डेन असत्थेन, विजेय्य पथविं इमं।

(बिना किसी दण्ड और शस्त्र से पृथ्वी को जीतना चाहिए।)

—महात्माबुद्ध (सुत्तपिटक अंगुत्तरनिकाय)

सुख का मानि भूतानि, यो दण्डेन विहिंसति।

अत्तनो सुखमेसानो, पेच्च सो न लभते सुखं॥

(सभी जीव सुख चाहते हैं, जो अपने सुख की इच्छा से दूसरे जीवों की हिंसा करता है, उसे न यहाँ सुख मिलता है, न परलोक में।)

—महात्मा बुद्ध (सुत्तपिटक—धम्मपद)

न तेन अरियो होति, येन पाणानि हिंसति।

अहिंसा सब्बपाणानं, अरियोति पवुच्चति।

(जो जीवों की हिंसा करता है वह आर्य नहीं होता, सभी जीवों के प्रति अहिंसा भाव रखने वाला ही आर्य कहा जाता है।)

—महात्मा बुद्ध (सुत्तपिटक—धम्मपद)

यतो यतो हिंसमनो निवत्तति,

ततो ततो सम्मतिमेव दुक्खं।

(मन ज्यों-ज्यों हिंसा से दूर हटता है, त्यों-त्यों दुःख शांत होता जाता है।)

—महात्मा बुद्ध (सुत्तपिटक—धम्मपद)

किसी भी प्रकार से कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है।

—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

(जो अहिंसक है और ज्ञान-विज्ञान से तृप्त है, वही ब्रह्मा के आसन पर बैठने का अधिकारी होता है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

हिंसा का त्याग अहिंसा है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

अहिंसा वास्तविक शक्ति की प्रतीक है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

यो नः कश्चित् रिरक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः।
स्वैः ष एवै रिरिषीष्ट युर्जनः॥

(जो मनुष्य किसी को राक्षस भाव से नष्ट करना चाहता है, वह स्वयं वकर्मों से नष्ट हो जाता है, अपदस्थ हो जाता है।)

—ऋग्वेद

मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः।
(तू स्वशरीर से किसी को पीडित न कर)

—यजुर्वेद

मा हिंसी : पुरुषं जगत्।
(मानव और जगम पशुओं की हिंसा न करो। — यजुर्वेद

नान्योऽन्य हिंस्या ताम्।
(परस्पर एक दूसरे को पीडित नही करना चाहिए।)

—शतपथ ब्राह्मण

अहिंसा परमोधर्मः सर्वप्राणभृतां वरः।
(समस्त प्राणियों के लिए अहिंसा सब से उत्तम धर्म है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

अहिंसको ज्ञानतृप्तः स ब्रह्मासनमर्हति।
(जो अहिंसक है और ज्ञान-विज्ञान से तृप्त है, वही ब्रह्मा के आसन पर बैठने का अधिकारी होता है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
(अहिंसा की भावना से अनुप्राणित रहकर ही प्राणियों पर अनुशासन करना चाहिए। —मनुस्मृति

अत्थि सत्थं परेण परं,
नत्थि असत्थं परेण परं।

(शस्त्र (हिंसा) एक से एक बढ़कर है। परन्तु अशस्त्र (अहिंसा) एक से एक बढ़कर नहीं है, अर्थात् अहिंसा की साधना से बढ़कर श्रेष्ठ दूसरी कोई साधना नहीं है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

तुमंसि नाम तं चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि।
तुमंसि नामत चेवजं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि।
तुमंसि नाम तं चेव जं परियावेयव्वं ति मन्नसि।

(जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है।
जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है।
जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू ही है।
अर्थात् स्वरूप दृष्टि से चैतन्य एक समान हैं। यह अद्वैत भावना ही अहिंसा का मूलाधार है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ।

(एक अहिंसक ऋषि की हत्या करने वाला एक तरह से अनन्त जीवों की हिंसा करने वाला होता है।)

—महावीर स्वामी (भगवती सूत्र)

कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति।

(कुछ लोग क्रोध से हिंसा करते हैं, कुछ लोग लोभ से हिंसा करते हैं और कुछ लोग अज्ञान से हिंसा करते हैं।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

अहिंसा तस थावर सव्व भूयखेमंकरी।

(अहिंसा (त्रस और स्थावर) सब प्राणियों का कुशल क्षेम करने वाली है।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण)

एयं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण।
अहिंसा समयं चेव, एतावन्तं वियाणिया॥

(ज्ञानी होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। अहिंसामूलक समता ही धर्म का सार है, बस इतनी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए।)

—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

अहिंसा निउणा दिट्ठा : सव्वभूएसु संजमो।

(सब प्राणियों के प्रति स्वयं को संयत रखना यही अहिंसा का पूर्ण दर्शन है।)

—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए।

(जो भय और वैर से मुक्त हैं, वे किसी प्राणी की हिंसा नहीं करते।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि।

(जीवन अनित्य है, क्षणभंगुर है, फिर क्यों हिंसा में आसक्त होते हो।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

हिंसाए पडिवक्खो होइ अहिंसा।

(हिंसा का प्रतिपक्ष अहिंसा है।)

—आचार्य भद्रबाहु (दशवैकालिक निर्युक्ति)

अज्झप्प विसोहीए, जीवनिकाएहिं संथडे लोए।
देसियमहिंसगत्तं, जिणेहिं तेलोक्कदरिसीहिं॥

(त्रिलोकदर्शी जिनवर देवों का कथन है कि अनेकानेक जीव समूहों से परिव्याप्त विश्व में साधक का अहिंसकत्व अन्तर में अध्यात्म विशुद्धि की दृष्टि से ही है, बाह्य हिंसा या अहिंसा की दृष्टि से नहीं।)

—आचार्य भद्रबाहु (ओघनिर्युक्ति)

आया चेव अहिंसा, आया हिंसत्ति निच्छओ एसो। जो होइ अप्पमत्तो।

(निश्चय दृष्टि से आत्मा ही हिंसा है और आत्मा ही अहिंसा। जो प्रमत्त है वह हिंसक और जो अप्रमत्त है वह अहिंसक।)

—आचार्य भद्रबाहु (ओघनिर्युक्ति)

मरदु व जियदु व जीवो,
अयदाचारस्सणिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बन्धो
हिंसामेत्तेण समिदस्स॥

(बाहर में प्राणी मरे अथवा जीये, अयताचारी—प्रमत्त के अन्दर में हिंसा निश्चित है। परन्तु जो अहिंसा की साधना के लिए प्रयत्नशील है, समितिवाला है, उसको बाहर में प्राणी की हिंसा होने मात्र से कर्मबन्ध नहीं है, अर्थात वह हिंसा नहीं है।

—आचार्य कुन्दकुन्द (प्रवचनसार)

भूतहिंत ति अहिंसा।
(प्राणियों का हित अहिंसा है।)

—चूर्णि (नन्दीसूत्र)

धम्मऽहिंसा समंनत्थि।
(अहिंसा के समान दूसरा धर्म नहीं है।)

—भक्तपरिज्ञा

सव्वे सिमासमाणं हिदय गब्भोव सव्वसत्थाणं।
(अहिंसा सब आश्रमों का हृदय है, सब शास्त्रों का गर्भ उत्पत्तिस्थान है।)

—भगवती आराधना

अहिंसा धर्म का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है।

—महात्मा गांधी

मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और मिथ्या-भाषण को सत्य से जीत सकेगा।

—गौतम बुद्ध

मनसा, वाचा, कर्मणा कभी किसी को किसी प्रकार का दुःख न पहुँचाओ। क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष को प्रेम से और हिंसा को अहिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो।

—स्वामी शिवानन्द

जीव-मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देने वाली है।

—स्वामी शंकराचार्य

जिस भाँति भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए।

—विदुर

अनेकों को जो एक रखती है, भेदों में से अभेद को ढूंढती है, वही अहिंसा है।

—विनोबा भावे

जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर खरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैरभाव भूल जाते हैं।

—पतंजलि

आँख

आँखों में मनुष्य की आत्मा का प्रतिबिम्ब होता है।

—अज्ञात

आँखें सारे शरीर का दीपक हैं।

—महात्मा गांधी

आँख का धर्म है देखना। देखने में ही आँख को आनन्द है, देखने में बाधा होते ही उसे कष्ट का अनुभव होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नियम और मुक्ति)

यदि सम्मुख कोई लज्जा का विषय उपस्थित हो, तो मन के लज्जित होने से पूर्व ही आँखें स्वयं ही लज्जित हो जाती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साधना)

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥

—बिहारी

जो बात वाणी नहीं प्रकट कर पाती, वही बात आँखें आसानी से बोल देती हैं।

—अज्ञात

मनुष्य की आँखें उसके चरित्र, व्यक्तित्व और अन्तःप्रवृत्ति का दर्पण है।

—अज्ञात

मन सों कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहाँ दिवान।
दृगन देखि जेहि आदरै, मन तेहि हाथ बिकान॥

—रहीम

आँखें तो जीवन के अनुभवों से भरा हुआ भंडार हैं।

—साने गुरु (आस्तिक)

काली आँखों को कभी कुछ भी अनुवाद नहीं करना पड़ता, मन अपने आप ही उन पर छाया डालता रहता है, मन के भाव स्वयं ही उस छाया को कभी फैलाते, कभी सिकोड़ते रहते हैं। कभी ये आँखें चमक-दमक कर जलाने लगती हैं तो कभी उदास होकर बुझ-सी जाती हैं, कभी डूबते हुए चन्द्र की तरह टकटकी लगाये न जाने क्या देखती रहती हैं तो कभी चंचल बिजली की भांति ऊपर-नीचे इधर-उधर चहुँ ओर बड़ी तीव्रता से छिटकने लगती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सुभा)

आँख का आँसू ढलकता देखकर,
जी तड़प करके हमारा रह गया।
क्या गया मोती किसी का बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

यह प्राणों का गायन है, यह है मूकों की भाषा,
आश्रय असहाय जनों का यह है हताश की आशा।
आँसू है गूढ़ प्रणय की व्याख्या युत सरला टीका,
इस अनुपम रस के आगे नवरस षटरस सब फीका।
गलकर गीले आँसू से पाषाण कलेजे कितने,
पानी पानी होकर के लगते हैं क्षण में बहने।

—हृदयनारायण पांडेय

पाप-ताप-संताप बहाने को या मानस धारा दो
पुण्यबीज, या करुण क्यारी सींचा करें हजारा दो;
कठिन काठ-से हृदय चीरने वाले हैं या आरे दो;
निर्दय हृदय आर्द्र करने को अथवा चले फुहारे दो।

—रूपनारायण पाण्डेय (पराग)

आँख के आँसू अमूल्य वस्तु हैं। प्रेम के कृतज्ञता के, आनन्द के, दुख के और पश्चात्ताप के आँसुओं से ही तो जीवन का बाग पनपता है।

—राजे गुप्त (मासिक)

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते।

—प्रेमचन्द

था जिगर पर जो फफोला पड़ गया,
फूट करके वह अचानक बह गया।
हाय! था अरमान जो इतना बड़ा,
आज वह कुछ बूँद बनकर रह गया॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

नेह न नैननि को कछु, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय॥

—बिहारी

मेरे छोटे जीवन में देना न तृप्ति का कण भर।
रहने दो प्यासी आँखें भरती आँसू के सागर॥

—महादेवी वर्मा

अश्रुपूर्ण प्यार बहुत ही लुभावना होता है।

—वाल्टर स्काट

नारी! तूने अपने अथाह अश्रुओं से विश्व के हृदय को इसी प्रकार घेर रखा है, जिस प्रकार सागर पृथ्वी को घेरे हुए है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आकर्षण

नाना प्रकार की आसक्तियों के निविड गाढ आकर्षण में हमारी प्रकृति एकदम पत्थर के समान हो गई है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (त्याग)

जिन वस्तुओं में आकर्षण नहीं रहता, वे उपेक्षित रहती हैं।

—यशपाल

यदि पुरुष के जीवन-विकास में स्त्री का आकर्षण विनाशकारी होता तो प्रकृति यह आकर्षण पैदा ही क्यों करती।

—यशपाल

आकांक्षा

संसार की सबसे बड़ी वस्तु धर्म की आड़ में आकांक्षा खेलती है।

—जयशंकर प्रसाद (स्वर्ग के खण्डहर)

सांसारिक आकांक्षा मनुष्य को बाँधती और घसीटती है।

—स्वामी रामतीर्थ

हमारी आकांक्षा, जीवन रूपी भाप को, इन्द्र-धनुष का रंग दे देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जीवन-स्मृति)

जीवन में आकांक्षाएँ होती हैं तो अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है।

—अज्ञात

इन्द्रिय-विषयों का त्याग किए बिना कामना-त्याग क्षणिक होता है, चाहे हम कैसा ही प्रयास क्यों न करें।

—महात्मा गांधी

जो प्रकाश अदृश्य रहता है और जिसका अंधकार में ही अनुभव होता है, उसीके लिए मेरी आकांक्षा है।

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जीवन-स्मृति)

आत्मा को सर्वत्र उपलब्ध करना ही तो एकमात्र आत्मा की आकांक्षा है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

मानव में उच्च होने की आकांक्षा की कोई सीमा नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रेम का अधिकार)

मानव की आकांक्षा किसी कल्पना को भी असम्भव कहकर नहीं मानती।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रेम का अधिकार)

सबसे अच्छी वस्तु पाने की जिसकी आकांक्षा होती है उसे बहुत-सी अच्छी वस्तुएँ छोड़ देनी पड़ती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (फेल)

आकांक्षा अयोग्यता का लक्षण है।

—जैनेन्द्र (पूर्वोदय-निबन्ध)

आकाश

जिस तरह निशा वसनीय आकाश उदयोन्मुख भास्कर के आसन्न आविर्भाव को जान लेता है, उसी प्रकार वेदाहम् पुरुष महान्तं आदित्य वर्णंतमसः परस्तात्।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नवयुग उत्सव)

आक्षेप

जब तक हम स्वयं निरपराध न हों तब तक दूसरों पर कोई आक्षेप लता के साथ नहीं कर सकते।

—सरदार वल्लभ भाई पटेल

आग

आग में पिघलकर सभी वस्तुएँ एक-सी हो जाती हैं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

आग आग से नहीं पानी से शांत होती है।

—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)

अगर अग्नि को शान्त करना चाहते हैं तो तृण को उससे दूर कर जिए, तब अग्नि आप ही शान्त हो जायेगी।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

अग्नि देवताओं का मुख है, अग्नि में डाली गई सोमरस की आहुतियाँ नताओं को पहुँच जाती हैं।

—अज्ञात

जब आग सुलग जाती है तो यों ही नहीं बुझ पाती। यदि उसे जबर-स्ती न बुझा दिया जाए तो आसपास की वस्तुओं को भस्मसात् किए ना वह नहीं छोड़ती।

—शरण (सोना माटी)

आचरण

आचरण एक शीशे के समान है, जिसमें प्रत्येक मानव अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है।

—गेटे

सुन्दर आचरण, सुन्दर देह से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा वह उच्चकोटि का हर्ष प्रदान करता है, यह सभी कलाओं में श्रेष्ठ कला है।

—एमर्सन

विश्व मृत्यु की छाया से आच्छादित है, ऐसा जानकर ही हम क्षमा करते हैं, नहीं तो हमारा आचरण किसी प्रकार नरम न पड़ता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दर्प का अन्त)

मनुष्य जिस समय पशु-तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आचरण और सत्यता के लिए आर्य जाति पुरातनकाल से प्रसिद्ध है।

—मेगस्थनीज

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चारित्र्यमेव व्याख्याति शुचि वा यदि वाशुचिम्॥

(मानव आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन, शूर है अथवा भीरु, पवित्र है अथवा अपवित्र।)

—वाल्मीकि (रामायण)

आचरण भाव का प्रकट रूप है।

—अज्ञात

जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया।

—विनोबा भावे

मयदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

(श्रेष्ठ पुरुष जो जो करता है अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं, वह जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उसके अनुसार चलते हैं।)

—श्रीकृष्ण (गीता)

आचार

विचार जब प्रकृति के साथ घुल-मिलकर एक हो जाते हैं, तब वे आचार बन जाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संस्कार)

समाज में सर्वसाधारण मे प्रचलित व्यवहार रीति को आचार कहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आधुनिक काव्य)

आचार, रूढ़ि और निर्बन्ध—इन सबसे परिस्थिति मे जो आचार या निर्बंध मनुष्य की धारणा के लिए लाभदायक होगा, वही है उस परिस्थिति का धर्म, आचार और निर्बन्ध।

—विनायक दामोदर सावरकर

नहि सर्वहितः कश्चिदाचारः संप्रवर्तते।
तेनैवान्यः प्रभवति सो परो बाधते पुनः।।

(कोई आचार सर्वहितकारी नहीं होता। किसी को वह लाभ देता है, तो किसी को बाधा भी वही पहुँचाता है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है।

—विनोबा भावे

हरेक आत्मकथा व्यथा का इतिहास है क्योंकि हरेक जीवन महान् और छोटे दुर्भाग्य का क्रमिक विकसित रूप है।

—शोपेनहार

आत्म-गौरव

आत्म-गौरव खोकर जीवित रहना मृत्यु से भी बुरा है।

—भर्तृहरि

अत्याचारी के समक्ष नाक रगड़ने से आत्म-गौरव नष्ट होता है।

—अज्ञात

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्मगौरव से ऊँची पलकें ऊँचा सिर ऊँचा मन॥
एक बूँद भी रक्त शेष हो, जब तक तन में हे शत्रुंजय।
हीन वचन मुख से न उचारो, मानो नहीं मृत्यु का भी भय॥

—रामनरेश त्रिपाठी (स्वप्न)

आत्म-निरीक्षण

देते हो समुपदेश बहुत भोले हो,
हर नए दोष देख सदा बोल बोले हो;
अपने कभी झाँक कर भीतर भी देखो तो,
कितना हलाहल इन प्राणों में घोले हो।

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

आदमी आकाश को भी जानता है;
आदमी पाताल की तह छानता है,
परखता भूगर्भ की सब हड्डियाँ,
किन्तु अपने को नहीं पहचानता है।

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

आत्म-बल

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊबकर क्षण-प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं—उनमें आत्मबल नहीं।

—सुभाषचन्द्र बोस

आत्म-बल की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धों के बावजूद दुनिया अभी कायम है।

—महात्मा गांधी (हिन्द-स्वराज्य)

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्म-बल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है।

—महात्मा गांधी

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास से वीरता निश्चय ही सफल होती है।

—अज्ञात

आत्म-विश्वास में वह बल है जो सहस्रों आपदाओं का सामना कर उन पर विजय पा सकता है।

—स्वेट मार्डेन

आत्म-विश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है।

—एमर्सन

जिस मनुष्य में आत्म-विश्वास नहीं है वह शक्तिमान् होकर भी कायर है और पण्डित होकर भी मूर्ख है।

—अज्ञात

आत्म-विश्वास के द्वारा दुर्गम पथ भी सुगम हो जाता है।

—अज्ञात

आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम सिर्फ यही तीन जीवन को बल और सबलता प्रदान कर देते हैं।

—टेनीसन

आत्म-विश्वास ही वह अटूट तार है जिसके सहारे हृदय स्पन्दित होता है।

—एमर्सन

आत्म-विश्वास पराक्रम का सार है।

—एमर्सन

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारे आत्म-विश्वास और धीरज पर अवलम्बित रहती हैं।

—स्वेट मार्डन

आत्म-विश्वास बढ़ाने का ढंग यह है कि तुम वह कार्य करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस तरह ज्यों-ज्यों तुम्हें कामयाबी मिलती जाएगी, तुम्हारा आत्म-विश्वास बढ़ता जाएगा।

—डेल कारनेगी

आपके कार्य की नींव आपका आत्म-विश्वास है। आप अमुक कार्य कर सकते हैं, इस विचार में ही शक्ति है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट)

आत्म-विश्वास ही है वह अद्भुत, अदृश्य और अनुपम शक्ति, जिसके बल पर आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते जाते हैं। वही आपकी आत्मा है, वही आपका पथ-प्रदर्शक है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट)

उस व्यक्ति का भविष्य जिसमें कि आत्म-विश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ है, सर्वथा चिन्तारहित है। आत्म-विश्वास में ही वह अद्भुत शक्ति है कि मनुष्य सहस्रों विपत्तियों का सामना अकेले ही कर सकता है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉ

निर्धन मनुष्यों की सबसे बड़ी पूँजी और मित्र उनका आत्म-विश्व है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉ

आत्म-विश्वास जिसके हृदय मे हो, वह व्यक्ति अपने कार्य को पू करके ही छोड़ेगा।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट

आत्म-विश्वास की न्यूनता ही हमारी बहुत-सी असफलताओं क कारण होती है, बल के विश्वास में ही बल है। वे सबसे निर्बल हैं, चा वे कितने ही बलशाली क्यों न हों, जिन्हें अपने आप तथा अपने बल प विश्वास नहीं है।

—बोर्व

गौण, अतिशय गौण है, तेरे विषय में,
दूसरे क्या बोलते, क्या सोचते हैं।
मुख्य है यह बात पर अपने विषय में,
तू स्वयं क्या सोचता क्या जानता है।

आत्म-बल की रक्षा के लिए बाहुबल के सिवा कोई साधन नहीं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

आत्म-सम्मान की रक्षा करना हमारा सबसे पहला धर्म है। आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले, तो वह नरक है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

हमें सबसे पहले आत्म-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गए हैं। अपमान और हानि चुपके से सह लेते हैं। ऐसे प्राणियों को तो स्वर्ग में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता।

—प्रेमचन्द

बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्म-सम्मान नहीं गँवाता।

—महात्मा गांधी

आत्म-सम्मान करना सफलता की सीढ़ी पर पग रखना है।

—अज्ञात

सुख भोग की लालसा आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर देती है।

—प्रेमचन्द (वरिदान)

भयो रक्त नहिं जिन दृगन, देखि आत्म-अपमान।
क्यों न बिधे तिन में बिधे ! शूल विषम विष-बान॥

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

बिना मान तजि दीजियो, स्वर्गहु सुकृत समेत।
रहौ मान सों कीजियो, नरकहु नित्य निकेत॥

—वियोगी हरि (वीरसतसई)

वे तो मानत लोहि नहि, तैं कित भयो उमंग।
नहिं दीपहि कछु दरद क्यों, जरि-जरि मरै पतंग॥

—दीनदयाल गिरि (गिरि ग्रंथावली)

उस व्यक्ति का भविष्य जिसमें कि आत्म-विश्वास कूट-कूटकर भ
हुआ है, सर्वथा चिन्तारहित है। आत्म-विश्वास में ही वह अद्भुत शा
है कि मनुष्य सहस्रों विपत्तियों का सामना अकेले ही कर सकता है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट

निर्धन मनुष्यों की सबसे बड़ी पूंजी और मित्र उनका आत्म-विश्वा
है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट

आत्म-विश्वास जिसके हृदय में हो, वह व्यक्ति अपने कार्य को पू
करके ही छोड़ेगा।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट

आत्म-विश्वास की न्यूनता ही हमारी बहुत-सी असफलताओं क
कारण होती है, बल के विश्वास में ही बल है। वे सबसे निर्बल हैं, चा
वे कितने ही बलशाली क्यों न हों, जिन्हें अपने आप तथा अपने बल पर
विश्वास नहीं है।

—बोवी

गौण, अतिशय गौण है, तेरे विषय में,
दूसरे क्या बोलते, क्या सोचते हैं।
मुख्य है यह बात पर अपने विषय में,
तू स्वयं क्या सोचता क्या जानता है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

व्यवसाय का प्रयोजन जब बहुत अधिक बढता ही जाता है तब आत्मा की वाणी रुक जाती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

आत्मा जब स्वार्थ एव अहकार की ग्रन्थि से बद्ध होकर निरावच्छिन्न अकेला रहे तो वह बहुत म्लान रहता है, तब उसके सत्य को स्फूर्ति प्राप्त होती।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (वैराग्य)

आत्मा अपने सत्य को नानात्व मे उपलब्ध करने की चेष्टा करता है।

आत्मा का परिपूर्ण सत्य है परमात्मा मे।

आत्मा को ठीक प्रकार से समझ लेने से ही मुग्ध आसक्ति दूर हो नही जाती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (वैराग्य)

आत्मा का सत्य जान लेने से ही आत्मा का ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

आत्मा सत्य की परिपूर्णता मे ही अपने को पहचानता है, उस परम उपलब्धि द्वारा वह विनाश को एक दम अतिक्रमण कर जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विश्वास)

भोग के बधन मे जडित होने से आत्मा अपने विशुद्ध स्वरूप को उपलब्ध नही कर सकता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मृत्यु व अमृत)

आत्मा का परमात्मा के साथ एक सधर्म्य है। हमारी आत्मा भी लेकर खुश नहीं, देकर ही खुश होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (स्वभाव प्राप्ति)

आत्मा एक चिर स्रोत नदी की भाँति है। उसकी उत्पत्ति शिखर पर अनादि है, उसका सचार क्षेत्र भी अनन्त है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नदी तथा कूल)

सर्व स्रोतो मे परिकीर्ण होना आत्मा का धर्म है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आदेश)

आत्मा स्वयं में जो कुछ सीमा-बद्ध करके पाता है, उसे ही वह परमात्मा में असीम रूप में उपलब्ध करना चाहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (समग्र एक)

विश्व में वही आत्मा सुख और शांति को प्राप्त हो सकती है, जिसने अपनी आकांक्षाओं में से स्वार्थ को निकाल दिया हो।

—शरण (सोना माटी)

यह आत्मा एक स्रोतस्विनी की भाँति है। जैसे उसका उद्गम अनादि है, वैसे ही संचार क्षेत्र भी अनन्त है। आनन्दोद्दीपन की पावन घड़ियों में वह ऐसी गति को प्राप्त करता है, जिसका कोई विराम नहीं।

—शरण (सोना माटी)

न हो जब तक आत्मिक अवलंब, मृत्यु का अल्प बाह्य संसार,
खोजता मानव को अमरत्व, नहीं उसकी आत्मा का सार।

—सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन)

निश्चय रे आत्मा अक्षय धन,
वह अनन्त के पावक का कण,
जड़ चेतन की धूप छाँह से
जीवन शोभा का मुख गुंठन।

—सुमित्रानंदन पंत (वीणा)

ज्ञान, शक्ति, आनन्द सनातन है आत्मा का रूप
गुन से विरहित देह प्रकृति का केवल जंगम स्तूप॥

—रामानंद तिवारी (पार्वती)

छेदत शस्त्र न अनल जरावत। भिजवत वारि न वात सुखावत।
छिदत जरत भीजत नही सूखत। थिर पुराण नित अचल सर्वगत॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

आतम रथी शरीर रथ, बुद्धि सारथी जान।
मन डोरी इन्द्रिय हय, मारग विषय पिछान॥

—गिरिधर कविराय (कुंडलिया)

आत्मा पर विजय पाने का आशय निर्लज्जता या विषय कामना नहीं वल्कि इच्छाओं का दमन करना और कुवृत्तियों को रोकना है।

—प्रेमचंद (कायाकल्प)

आत्मा की आयु दीर्घ होती है। उसका गला कट जाय, पर प्राण नहीं निकलते।

—प्रेमचंद (रंगभूमि)

आत्मा को आत्मा ही की आवाज जगा सकती है।

—प्रेमचंद (कायाकल्प)

मैं तो आत्मा की अमरता पर विश्वास करता हूँ। जीवन के सागर में हम सब बिन्दु-मात्र हैं और जीवन की वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है।

—महात्मा गांधी

हमारी आत्मा अमर है।

—सुकरात

आत्मा वह अक्षय और अमरतत्व है जो अपनी चिन्तनता के कारण जन्म और मृत्यु की सीमा से परे है।

—पं० कमलापति त्रिपाठी

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरों में जाकर भिन्न नहीं हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान् आत्मा पृथक-पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होती।

—प्रेमचंद

य आत्मापहृपाप्मा विजरो विमृत्यविशोको विजिघत्सोऽ
पिपासः सत्यकामःसत्यसकल्पः सोऽन्वेष्टव्य.स विजिज्ञासितव्यः।

जो *आत्मा* पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, भूखरहित, प्यासरहित, सत्यकाम, सत्यसंकल्प है उसे खोजना चाहिए, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए।

—छान्दोग्योपनिषद्

अयमात्मा ब्रह्म ।
(यह आत्मा ही ब्रह्म है ।

—बृहदा० उपनिषद्

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त देह का आश्रय लेता है।

—गेटे

जितनी प्रिय वस्तु है उनमें आत्मा ही प्रधान है और प्रभु हरि ही उनसब में आत्मारूप में स्थित हैं, अतः उनसे बढ़कर प्रियवस्तु और कौन हो सकती है।

—नारद मुनि

असुर्या नाम ते लोका,
अन्धेन तमसावृताः ।
तास्ते प्रेत्याभि गच्छन्ति,
ये केचात्महनो जनाः ॥

(जो मानव आत्मा का हनन करते हैं, त्यागपूर्वक भोग नहीं करते हैं, वे गहरे अंधकार से आवृत असुर्यलोक में जाते हैं।)

—ईशावास्योपनिषद्

जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया।
जेण वियाणइ से आया। त पडुच्च पडि सखाए।

(जो आत्मा है, वह विज्ञाता है। जो विज्ञाता है, वह आत्मा है। जिससे जाना जाता है, वह आत्मा है। जानने की इस शक्ति से ही आत्मा की प्रतीति होती है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

सयमेव कडेहिं गाहइ, नोतस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठया।
(आत्मा अपने स्वयं के कर्मों से ही बंधन में पड़ता है। कृत कर्मों को भोगे बिना मुक्ति नहीं है।)

—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्, नान्यात्किञ्चनमिषहा स ऐक्षत लोकान्नु सृजा इति।

(यह समूचा जगत पहले आत्मा ही था, अन्य कोई तत्त्व नहीं था; उस आत्मा ने स्वइच्छा से लोक का सृजन किया।)

—ऐतरेय ब्राह्मण

रूपंरूपं प्रतिरूपोवभूव।

(आत्मा प्रत्येक रूप (देह) के अनुरूप अपना रूप बना लेता है।)

—ऋग्वेद

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते।

(इन्द्र (आत्मा) माया के कारण विभिन्न रूपों को धारण करता हुआ विचरण करता है।)

—ऋग्वेद

तद्पश्यत् तदभवत् उदासीत्।

(जो आत्मा ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वह अज्ञान से छूटते ही ब्रह्मरूप हो जाता है। वस्तुतः वह ब्रह्म ही है।)

—यजुर्वेद

सनातेन मेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णव.।

(इस आत्मा को सनातन कहा है। यह मृत्यु के बाद पुनर्जन्म लेकर फिर नवीन हो जाता है।)

—अथर्ववेद

बाला देकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते।

(यह आत्मा बाल से भी अधिक सूक्ष्म है। अतः यह विश्व में एक यानी प्रमुख होते हुए भी नहीं सा दिखता है।)

—अथर्ववेद

आत्मा हि वरः।

(

एप उ एव वामनीः, एपहि सर्वाणि वामानि अभिसंयन्ति।

(यह आत्मा 'वामनी' है; क्योंकि सृष्टि के सभी सौन्दर्यों का यह आत्मा नेता है, अग्रणी है।

—छान्दोग्य उपनिषद्

सर्वं ह पश्यः पश्यति, सर्वमाप्नोति सर्वशः।

(आत्मा के भूमा स्वरूप का साक्षात्कार करने वाला सब कुछ देख लेता है। अर्थात् आत्मद्रष्टा के लिए कुछ भी प्राप्त करने जैसा शेष नहीं रहता।)

—छान्दोग्य उपनिषद्

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्वग्रंथीनां विप्रमोक्षः॥

(आहार शुद्ध होने पर अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। अन्तःकरण शुद्ध होने पर ध्रुव स्मृति हो जाती है—अपने ध्रुव एवं नित्य आत्म स्वरूप का स्मरण हो जाता है, अपने ध्रुव स्वरूप का स्मरण हो जाने पर अन्दर की सब गाँठें खुल जाती हैं अर्थात् आत्मा बंधन मुक्त हो जाता है।)

—छान्दोग्य उपनिषद

आत्मानमेवेह महय्यनात्मानं परिचरन्नुभौ,
लोका व वाप्नोतीमं चा मुष।

(आत्मा की पूजा एवं सेवा करने वाला मानव दोनों लोकों को सुन्दर बनाता है—इस लोक को भी और उस लोक को भी।

—छान्दोग्य उपनिषद्

योऽयमात्मा इदममृतम्, इदं ब्रह्म, इदं सर्वम्।

(आत्मा ही अमृत है, आत्मा ही ब्रह्म है, आत्मा ही सब कुछ है।

—बृहदारण्यक उपनिषद्

अदृष्टो द्रष्टा।

(आत्मा स्वयं अदृष्ट रहकर भी द्रष्टा है, देखनेवाला है।)

—बृहदारण्यक उपनिषद्

आत्मा अगृह्यो, नहि गृह्यते; अशीर्यो नहि शीर्यते,
असंगो, न हि सज्यते; असितो न हि व्यथते, नरिष्यते।

(आत्मा अग्राह्य है, अतः वह पकड़ में नहीं आती; आत्मा अशीर्य है, अतः वह क्षीण नहीं होती; आत्मा असंग है, अतः वह किसी से लिप्त नहीं होती; आत्मा असित है—बंधन रहित है, अतः वह व्यथित नहीं होती, नष्ट नहीं होती।)

—बृहदारण्यक उपनिषद्

विरज. पर आकाशदज आत्मा महान् ध्रुवः।

(यह अजन्मा आत्मा महान् ध्रुव है, मल रहित आकाश से भी बढ़कर महान् निर्मल है।)

—बृहदारण्यक उपनिषद्

नैव स्त्री न पुमानेष, न चैवायं नपुंसक.।
यद्यच्छरीर मादत्ते, तेन तेन स रक्ष्यते।

(जीवात्मा न स्त्री है, न पुरुष है, न नपुंसक है। ये सब लिंग देह के हैं, अतः जिस-जिस शरीर को यह आत्मा ग्रहण करता है, तदनुसार उसी लिंग से युक्त हो जाता है।)

—श्वेताश्वतर उपनिषद्

योऽन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते।
न तस्य देवाः श्रेयांसो यस्यात्माऽपि न कारण ॥

(जो स्वयं अपनी आत्मा का तिरस्कार करके कुछ का कुछ समझता है और करता है, स्वयं का अपना आत्मा ही जिसका हित साधन नहीं कर सकता है, उसका देवता भी भला नहीं कर सकते।)

—वेदव्यास (महाभारत)

बन्धुरात्मा ऽऽत्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।

(जिसने अपने-आपसे अपने-आपको जीत लिया है, उसका अपना आत्मा ही अपना बन्धु है।)

—श्रीकृष्ण (भगवद् गीता)

एष उ एव वामनीः, एषहि सर्वाणि वामानि अभिनयन्ति।

(यह आत्मा 'वामनी' है; क्योंकि सृष्टि के सभी सौन्दर्यों का यह आत्मा नेता है, अग्रणी है।

—छान्दोग्य उपनिषद्

सर्वं ह पश्यः पश्यति, सर्वमाप्नोति सर्वशः।

(आत्मा के भूमा स्वरूप का साक्षात्कार करने वाला सब कुछ देख लेता है। *अर्थात् आत्मद्रष्टा के लिए कुछ भी प्राप्त करने जैसा शेष नहीं रहता।*)

—छान्दोग्य उपनिषद्

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्वग्रंथीनां विप्रमोक्षः॥

(आहार शुद्ध होने पर अन्त.करण शुद्ध हो जाता है। अन्तःकरण शु होने पर ध्रुव स्मृति हो जाती है—अपने ध्रुव एवं नित्य आत्म स्वरूप *स्मरण हो आता है, अपने ध्रुव स्वरूप का स्मरण हो आने पर अ*न्त सब गांठें खुल जाती हैं अर्थात् आत्मा बंधन मुक्त हो जाता है।)

—छा

आत्मानमेवेह महय्यन्नात्मानं परिचरन्नुभ
लोका व वाप्नोतीमं चा मुंच

(आत्मा की पूजा एवं सेवा करने वाला मानव दोनों बनाता है—इस लोक को भी और उस लोक को भी।

योऽयमात्मा इदममृतम्, इदं ब्रह्म, इदं सर्वम्।

(आत्मा ही अमृत है

आत्मा एक अद्भुत शक्ति का भण्डार है, जिसका आप विवेचन तो नहीं कर सकते, पर जिसका आप अनुभव अवश्य कर सकते हैं। यही अद्भुत शक्ति आपके निश्चय को कार्य रूप में परिणत करती है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकल्ज ऑफ राइट थॉट)

आत्मा कुछ न कुछ जरूर कहती है, उसकी सलाह मानना तुम्हारा धर्म है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

आत्मा का संतोष जीवन का तत्व है, मूल्य है।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

आत्मा तर्क से परास्त हो सकती है, परिणाम का भय तर्क से नहीं होता। वह पर्दा चाहता है।

—प्रेमचंद (सेवासदन)

आत्मीयता

आत्मीयता अन्तस्थ सहानुभूति को खोलती है। उसमें व्यक्ति खींचता और छीनता नहीं, देता और बरसाता है। आत्मीयता मिलाती है, अहंता काटती है।

—जैनेन्द्र (सोच विचार)

आदत

आदत रस्सी के समान है। हर दिन इसमें एक बल देते हैं और अन्त में इसे तोड़ नहीं सकते।

—मान

नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़ुवाहट नहीं छोड़ती, इसी तरह नीच सज्जनों के संग रहकर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता।

उच्च आदर्श महान् मस्तिष्क को बनाते हैं।

—इमर्सन

जो आदर्श हमें क्रोध एवं मोह से बचने को कहता है, मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र बनने को कहता है। वह पाप एवं दुःख से पूर्ण जीवन के थपेड़ों से व्यग्र मानव के लिए असम्भव आदर्श है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हमारे आदर्श ऊँचे और उनका चरितार्थ होना इतना ही निश्चित है जितना कल का सूर्योदय। ऊंचे आदर्श की ओर रेंगकर नहीं जाया जा सकता। उसके लिए हमें उड़ान लेनी होगी, अपनी बलि देनी होगी।

—श्री अरविन्द

अपने आदर्श तक पहुँचने के लिए आपकी आस्था, आपकी श्रद्धा आपकी बड़ी सहायता करती है।

—स्वेट मार्डन (मिरेकेल्स ऑफ राइट थॉट)

आदर्श की ओर यात्रा करनेवाला व्यक्ति सदा मुक्त रहता है, उसका स्वभाव खुलता ही जाता है। जबकि आदर्शवादी व्यक्ति अपने स्व के घेरे को और मजबूत ही बनाता है।

—जैनेन्द्र (श्रेय और प्रेय)

आनन्द

पीड़ा तो स्वयं को सम्भाल पाती है; किन्तु आनन्द का भार बांटने के लिए तो किसी मानव का साथ होना आवश्यक है।

—मार्क ट्वेन

आनन्द का स्रोत अपने अन्दर है और उसे अपने अन्दर से ही ढूंढ निकालना होगा।

—अज्ञात

जो वस्तु आनन्द नहीं प्रदान कर सकती, वह सुन्दर नहीं हो सकती और जो सुन्दर नहीं हो सकती वह सत्य भी नहीं हो सकती। जहाँ आनन्द है वहीं सत्य है।

—प्रेमचन्द

सुख-दुःख देने वाली बाहरी चीजों पर आनन्द का आधार नहीं है। आनन्द सुख से भिन्न वस्तु है। मुझे धन मिले और मैं उसमें सुख मानूं यह मोह है। मैं भिखारी होऊँ, खाने का दुःख हो, फिर भी मेरे इन चोरी या किन्हीं दूसरे प्रलोभनों में न पड़ने में जो बात मौजूद है वह मुझे आनन्द देती है।

—महात्मा गाधी

किसी ईश्वरीय यथार्थ से सम्मिलन, किसी स्वर्गीय आनंद से अनुभूति केवल धर्म के मार्ग से ही सम्भव नहीं है, प्रार्थना और उपवास के अतिरिक्त भी ऐसे मार्ग हैं, जिनसे वहाँ तक पहुँचा जा सकता है।

—सामर्सट मॉम

एन्थोनि ने प्रेम मे, ब्रूटस ने कीर्ति मे और सीजर ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूंढा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एवं प्रत्येक नष्ट हो गया। संसार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव की तराजू पर तोली गयीं तो सबकी सब निकम्मी निकलीं अर्थात् सबके सब निस्सार प्रतीत हुए केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला।

—स्वामी रामतीर्थ

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात् आनन्दाद् ध्येव खल्विमानि भूतानि।
जायन्ते आनंदेन जातानि जीवन्ति आनन्दं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति॥

(आनन्द ही ब्रह्म है, यह जान, आनन्द से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होने पर आनन्द से ही जीवित रहते हैं और मृत्यु से आनन्द में समा जाते है।)

—उपनिषद्

सुख या आनन्द कर्म के रूप मे रहता है।

—स्वामी रामतीर्थ

आनन्द ही एक ऐसी चीज है, जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं।

—कारमेन सिल्वा

सुख और आनन्द ऐसे इत्र है, जिन्हें जितना ज्यादा छिड़कोगे उतनी ही ज्यादा सुगन्धि आपके अदर समायेगी।

—एमर्सन

आनन्द का अन्तरग सरलता है, बहिरग सौन्दर्य है, इसी से वह स्वस्थ रहता है।

—जयशंकर प्रसाद (एक घूंट)

उत्तेजनामय आनन्द को अनुभव करने के लिए एक साक्षी भी चाहिए। बिना किसी दूसरे को अपना सुख दिखाये हृदय भली भाँति से गर्व का अनुभव कर पाता।

—जयशंकर प्रसाद (प्रतिध्वनि)

उन सभी लोगों को जो आनन्द के इच्छुक है, आनन्द बाँटना चाहिए क्योंकि आनन्द जुड़वाँ उत्पन्न हुआ था।

—बायरन

पीड़ा के परिमाप मे ही आनन्द का परिमाप है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कवि की कैफियत)

अभिलाषा की पूर्ण चरितार्थता से जो आनन्द उत्पन्न होता है, उस आनन्द से ही सफल अनुसंधान नि.शेष हो जाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (त्याग का फल)

आनन्द की पूर्ति सौन्दर्य मे दृष्टिगत होती है।

आनन्द स्वभावतः मुक्त है। उस पर जोर नही चलता, हिसाब भी नहीं चलता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सौंदर्य)

विज्ञानमानन्द ब्रह्म।

(विज्ञान और आनन्द ब्रह्म ही है।)

—बृहदारण्यक उपनिषद्

सीमा के भीतर सीमा को खोदने ही मे भक्ति का सच्चा आनन्द है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

केवल साधनावस्था मे ही आनन्द रहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संहरण)

विषय के साथ विषयी के एक हो जाने मे जो आनन्द है, वही आनन्द है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य तत्त्व)

कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड का चेतन आनद।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

आपत्ति

अग्नि स्वर्ण को परखती है, आपत्ति वीर को।

—सेनेका

आपत्तियों को पराजित करना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है।

—शोपेनहार

आपत्ति मानव बनाती है और दौलत दानव।

—विक्टर ह्यूगो

पाँच रूप पाण्डव भये रथ-वाहक नलराज।
दुरदिन परे 'रहीम' कहि बड़ेन किये घटि काज॥

—रहीम

विपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय।

—रहीम

कसे कनकु मनि पारिखि पाये।
पुरुष परखियहि समय सुभाये॥

—तुलसीदास (मानस)

हम तकलीफ में बहुत जल्द झुँझला उठते हैं। गर्म पानी को उबालने के लिए तेज आँच की आवश्यकता नहीं, हल्की-सी आँच ही काफी है।

—श्री सुदर्शन

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥

—तुलसीदास (मानस)

आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

एक आपत्ति अनेक आपत्तियों की जननी होती है।

—अज्ञात

मानव आपत्तियों का लक्ष्य बनने के लिए ही पैदा हुआ है, अतएव बुद्धिमान् मानव को आपत्ति से नहीं घबराना चाहिए।

—कन्फ्यूशियस

आभूषण

गहनों से बुड्ढे नयी बीवियों का दिल खुश किया करते हैं।

—प्रेमचन्द (गबन)

अलंकार भावों के अभाव का आवरण है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

स्त्री का गहना ईख का रस है, जो पेरने ही से निकलता है।

—प्रेमचन्द (बेटों का धन)

लज्जा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है।

—प्रेमचन्द

सुन्दर आकृति वालों के लिए आभूषण की आवश्यकता नहीं है।

—कालिदास

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है, जो अन्य आभूषणों के सदृश कभी घिसती नहीं।

—भर्तृहरि

नारी का सतीत्व ही उसका आभूषण है।

—अज्ञात

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमाबलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्॥

(ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्-संयम, ज्ञान का शांति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, बलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है।)

—भर्तृहरि

आभूषणों से आत्मा ऊँची नहीं हो सकती।

—प्रेमचन्द (ब्रह्म का स्वांग)

गहने ही स्त्री की सम्पत्ति होते हैं। पति की और किसी सम्पत्ति पर उसका अधिकार नहीं होता। इन्हीं का उसे बल और गौरव होता है। एक-एक गहना मानो विपत्ति और बाधा से बचाने के लिए एक-एक रक्षास्त्र है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं। शेष सब नाम मात्र के भूषण हैं।

—संत तिरुवल्लुवर

आय

धर्म की कमाई में बल होता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

लूट की कमाई को हराम समझने के लिए शरा का पाबन्द होने की जरूरत नहीं है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

सच्ची कमाई उन्हीं की है जो छाती फाड़कर धरती से धन निकालते हैं।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।

—प्रेमचन्द (नमक का दारोगा)

आमदनी पर सबकी निगाह रहती है, खर्च कोई नहीं देखता।

—प्रेमचन्द (मैंर का अंत)

बहुत धनशाली कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो निर्धन हो जाता है।

—चाणक्य

आयु

तीन साल की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस साल में बुद्धि और चालीस साल में विवेक।

—फ्रेंकलिन

यौवन भयंकर भूल है, मनुष्यत्व संघर्ष है, जरा पश्चात्ताप है।

—डिजराइल

आहोहात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह।
आयूंषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः॥

(दिवस-निशा निरन्तर बीत रहे हैं और जगत् में सभी प्राणियों की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं—ठीक उसी समान, जैसे दिवाकर की किरणें ग्रीष्म ऋतु में जल्दी ही जल को सुखाती रहती है।)

—वाल्मीकि रामायण (अयोध्याकाण्ड)

आरत

रहत न आरत के चित चेतू।
आरत काहु न करइं कुकरमु।

—तुलसीदास

आरत कहहि विचार न काऊ।
सूझ जुआरिहि आपन दाऊं।

—तुलसीदास

आरम्भ

जिस कार्य को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसको आरम्भ करो। हिम्मत में प्रतिभा, बल और जादू है। केवल कार्य में जुट जाओ, मन में वेग आ जायेगा। आरम्भ करो, कार्य निबट जायेगा।

—गेटे

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्न विहता विरमन्तिमध्याः।
विघ्नैं पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति॥

(नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्य श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पड़ने पर बीच में ही छोड़ देते हैं; लेकिन उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किए हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते।)

—भर्तृहरि

किसी काम का आरम्भ उसका प्रमुख अंग होता है ।

—प्लेटो

आराम

बहुत अधिक आराम स्वयं दर्द बन जाता है ।

—होमर

हमारे अधिकांश आराम की उत्पत्ति आपद्काल में होती है ।

—यंग

आराम हराम है ।

आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस संसार से चले गए हैं और जाते समय स्वतन्त्रता का दीप सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए हमें दे गए हैं । यह उस ध्येय के प्रति विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने की हमने प्रतिज्ञा की है। यह उन लाखों के प्रति विश्वासघात है जो कभी आराम नहीं करते ।

—जवाहरलाल नेहरू

आलस्य

दुनिया में आलस्य बढ़ाने सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है ।

—विनोबा भावे

आलस्य जीवित मानव को दफना देता है ।

—जेरेमी टेलर

जब तक आलसी निद्रालीन है, तब तक गहरी भूमि जोत लो ।

—अनाम

आलस्य दरिद्रता का मूल है ।

—यजुर्वेद

आलस्य दुर्बल मन वालों का एकमात्र शरण है और मूर्खों का अवकाश दिवस।

—चेस्टर फील्ड

आलसियों के समान जीवित रहने से समय और जीवन पवित्र नहीं किए जा सकते।

—रस्किन

आलस्य गरीबी की कुंजी और सारी बुराइयों की मूल है।

—स्परजन

आलसी मनुष्य सदा दुःखी और दूसरों के लिए भार-रूप रहता है।

—अज्ञात

आलसी को सदा असन्तोष रहता है।

—अज्ञात

आलस्य वह रोग है, जिसका रोगी कभी नहीं सम्भलता।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

आलस्यं स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।
सन्तोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्त्वस्य॥

(आलस्य, स्त्री-सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, सन्तोष और डरपोकपन ये छः बातें उन्नति में बाधक हैं।)

—हितोपदेश

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥

(आलस्य ही मनुष्य देह में रहनेवाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है जिसके करने से मनुष्य दुःखी नहीं होता।)

—[illegible] ठाकुर ([illegible])

[illegible] निर्धारण का काम है किन्तु यदि आलस्य नहीं करना उसके [illegible]

—[illegible]

श्रम में कमला बसती है।

जो व्यक्ति कर्महीन और आलसी है, वही दरिद्र है।

—संत तिरुवल्लुवर

आलोचना

कभी-कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है।

—अज्ञात

जब तक तुममें दूसरों को व्यवस्था देने या दूसरों के अवगुण ढूंढने, दूसरों के दोष ही देखने की आदत मौजूद है तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात् करना अत्यन्त कठिन है।

—स्वामी रामतीर्थ

जब तुम्हारे अपने दरवाजे की सीढ़ियाँ मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी हुई गन्दगी का उलाहना मत कीजिए।

—कन्फ्यूशियस

आलोचना पेड़ की टहनी से बढ़िया फूल और कीड़े—दोनों को एक साथ ही अलग कर देती है।

—रिक्टर

स्वयं ईश भी मानव के कर्मों का विचार उसकी मृत्यु से पूर्व नहीं करते।

—डॉ० जानसन

आलोचना भयावह है, क्योंकि वह मानव के बहुमूल्य गर्व पर चोट करती है और उसके क्रोध को भड़काती है।

—डेल कारनेगी

कभी-कभी आलोचना अपने सखा को भी शत्रु के कुटीर में भेज देती है।

—अज्ञात

जिस मानव की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के समीप होता है।

—सुकरात

आवरण

आज आँधी की तरह आये हुए पैसे ने उसकी बदसूरती पर ऐसा ही आवरण डाला था, जैसे कि कोई नवयुवती चेहरे के दागों और उसके रंगों पर क्रीम और पाउडर का आवरण डाल लेती है।

—शरण (जिन्दगी की तहें)

आवागमन

आवागमन विश्व का सहज धर्म है, इससे ईश्वर को भी छुट्टी नही है।

—अज्ञात

जन्म तो मरण और पुनर्जन्म की परम्परा की गाथा है। हमें पुनर्जन्म प्राप्त करने के लिए पहले मृत्यु को अंगीकार करना होगा।

—रोम्याँ रोलाँ

जन्म और मृत्यु जगत् के दो निर्विवाद सत्य हैं। आवागमन की समस्या इन्ही दो सत्यों का स्पर्श करती है।

—अज्ञात

आवेग

बड़े-बड़े महान् संकल्प आवेग मे ही जन्म लेते हैं।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

आवेग में हम उद्दिष्ट स्थान से आगे निकल जाते हैं।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

आवेश

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्म-बल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है।

—महात्मा गांधी

आवेश के प्रभाव से बुद्धि विपरीत हो जाती है।

—अज्ञात

आवेश बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता—इन सबका दिवाला निकाल देता है।

—अज्ञात

आश्चर्य

सम्पूर्ण आश्चर्य अज्ञानता का फल है।

—जानसन

आश्चर्य अज्ञानता-सुता है।

—आर फ्लेरियो

आश्चर्य पूजा का आधार है।

—कार्लाइल

आश्चर्य ज्ञान का मूल है।

—बेकन

आश्चर्य दर्शन का पहला कारण है।

—अरस्तू

आश्चर्य अनिश्चित प्रशंसा है।

—पंत

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमसादनम् ।
शेषा जीवितुमिच्छन्ति कि माश्चर्यमतः परम् ॥

(हर रोज जीव मौत के मुख में जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर रहना चाहते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य क्या होगा ?)

—वेदव्यास (महाभारत)

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली

अथर्ववेद-चौथा वेद, एक पुरातन भारतीय ग्रंथ ६१, ६२
अब्दुर्रहीम खानखाना 'रहीम' (१६१०-१६८३) हिन्दी कवि १६, ३२, ६८, १०२, १०३
अन्नपूर्णोपनिषद्, महान् भारतीय दार्शनिक ग्रंथ २७
अनूप, हिन्दी कवि ६०
डॉ० अमरनाथ झा, (१८९७-१९५५) शिक्षा शास्त्री, अंग्रेजी व हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक २४
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (१९२२, २००४ वि०) हिन्दी कवि १४, ५७, ७०
अरविन्द, महर्षि (१८७२-१९५०) योगी, भारतीय महान् विचारक २४, २९, ९९
अरस्तू (३८४-३२२ ई० पू०) यूनानी महान् दार्शनिक ३५,७७, ११२
ऑक्टन, लार्ड, अंग्रेज लेखक २१
आत्मप्रबोध उपनिषद्, महान् भारतीय दार्शनिक ग्रंथ ८६
ऑस्कर वाइल्ड, अंग्रेजी लेखक ३०
इब्सन, एच० (१८२८-१९०६) नार्वेजियन नाटककार ८
इलिएट, जार्ज (१८१९-१८८०) अंग्रेज उपन्यासकार १७,५३
इसिआसियाई, भारतीय पुरातन ग्रंथ ११
ईशावास्योपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ, २७ ९०
ईसा, महात्मा, ईसाई धर्म के संस्थापक ६१
उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ १००
ऋग्वेद, प्राचीनतम भारतीय ग्रंथ ६३, ८५, ९१
एमर्सन आर० डब्ल्यू० (१८०३-१८८२) दार्शनिक, अमेरिकन कवि १५, ३८, ५३, ५४, ७४, ८०, ८१, १०१
एनकिरी, सी० वी० (१७४९-१८०३) इटेलियन कवि ३६
ऐतरेय ब्राह्मण, प्राचीन भारतीय ग्रंथ ९१

कठोपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ ८६, ६२
कन्फ्यूशस (५५०-४७८ ई० पू०) महान् चीनी दार्शनिक १३, १
कबीर, महात्मा (१४५६-१५७५) भारतीय संत १६, ३०, ३
    ४६, ५८, ७६
क्लाड बर्नर्ड, अंग्रेज लेखक ३६
कमलापति त्रिपाठी (१६०५-), राजनीतिज्ञ सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक
काउले, अब्राहम (१६१८-१६६७), अंग्रेज कवि ७७
काका कालेलकर (१८८५-), भारतीय शिक्षा शास्त्री, लेखक ५६
कामवेल-ब्रिटिश डिक्टेटर ११०
कारमेन सिल्वा १०१
कार्लाईल, टी० (१७६५-१८८१), इतिहासकार, अंग्रेज लेखक ५२,
काल्विन, जॉन (१५०७-१५६४), फ्रेंच सुधारक ३
कालिदास (ईसा के एक शती पूर्व), संस्कृत के प्रसिद्ध कवि व नाटककार
    २४, १०४
कुन्दकुन्द, आचार्य, जैन संत १०, ११, ४२, ६६
केशव, आचार्य (१६१२-१६७४ वि० स०) रीतिकालीन कवि ३३
कोल्टन, सी० सी० (१७८०-१८३२), अंग्रेज पादरी ७, २६, ५८
गच्छाचार १२
गिरजादत्त शुक्ल ७६
गिरिधर कविराय (१७७०-१८०० वि० स०), हिन्दी कवि ८८
गुरुनानक (१४६६-१५३८), सिखधर्म के संस्थापक ५६
गेटे, जे० डब्ल्यू० वी० (१७४६-१८३२), जर्मन कवि ६, ७४, ६०,
गैरी वाल्डी, जी० (१८०७-१८८२), हास्य लेखक व इटेलियन देश
    १०१
ग्रे, टामस (१७१६-१७७१), अंग्रेज कवि १४
गोपालप्रसाद व्यास, हास्य कवि ७
गोपथ ब्राह्मण, भारतीय पुरातन ग्रंथ ११, १२
गोल्ड स्मिथ (१७३०-१७७४), आयरिश कवि ३
गौतम बुद्ध, महात्मा (५६८-४८८ ई० पू०), बौद्ध धर्म के संस्थापक
    ६२, ६७
चाणक्य (ईसा से तीन शती पूर्व), अर्थशास्त्री व भारतीय महान्
    नीतिज्ञ ५, १३, १५, १७, २३, ३७, ७६, १०५
चेस्टरफील्ड, लार्ड (१६६४-१७७३), लेखक व अंग्रेज राजनीतिज्ञ १
चूर्णि, भारतीय पुरातन ग्रन्थ ६६

छान्दोग्य उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रन्थ ८५, ८६, ९३, ९४
जयशंकर प्रसाद (१९४६-१९९४ वि० सं०), हिन्दी कवि, उपन्यासकार, नाटककार, १५, २०, २१, २२, ३३, ३४, ३५, ३६, ४०, ४५, ४६, ४६, ५१, ५३, ५७, ६६, ७१, ८०, १०१, १०२, ११०
जवाहरलाल नेहरू, पंडित (१८८९-१९६४), प्रथम प्रधानमंत्री, भारतीय राजनीतिज्ञ नेता, वक्ता व यशस्वी लेखक १०३, १०७
जानसन, सैमुएल (१७०४-१७८४), अंग्रेज लेखक व आलोचक २६, १०६, ११२
जार फ्लेरियो (१५५३-१६२५), अंग्रेज लेखक ११२
जैरोल्ड, डी० (१७०३-१८५७), अंग्रेज नाटककार ३
जैनेन्द्रकुमार (१९०५-), प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यासकार, कथाकार व दार्शनिक चिंतक ५७, ६०, ७२, ९७, ९९
जोधराज, हिन्दी कवि ४३
टामसन, जे० (१७००-१७४८), स्काटिश कवि ७
टेनीसन, लार्ड (१८०९-१८९०), अंग्रेज राजकवि ८१
टेलर, जेरैमी (१६१३-१६६७), अंग्रेज पादरी १४, १०७
डिकेन्स, चार्ल्स (१८१२-१८७०), अंग्रेज उपन्यासकार १४
डिजरायली (१८०४-१८८१), उपन्यासकार, अंग्रेज राजनीतिज्ञ १०५
डेलकारनेगी, प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक ४०, ८१, १०६, ११०
तिलक, बालगंगाधर, लोकमान्य (१८५६-१९२०), भारतीय राजनीतिज्ञ, तथा यशस्वी लेखक ५६
तिरुवेल्लुवर, संत (१०० ईसा पूर्व), महान् तमिल संत १०५, १०६
तुलसीदास (१५८९-१६८० वि० स०), महान् भारतीय संत, हिन्दी महाकवि १५, २५, ३८, ५१, ५२, ७७, १०३, १०६
तैत्तिरीय उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक सत ६१
दांते, ए० (१२६५-१३२१) इटेलियन महाकवि ११०
द्वारकाप्रसाद मिश्र—हिन्दी कवि २३, ३४, ३६, ४१, ७६, ८८
दिनकर, रामधारीसिंह (१९६५ वि० स०), भारत सरकार के हिन्दी परामर्शदाता, हिन्दी कवि ५, ६, २३, ३०, ३१, ८२
दीनदयाल गिरि—हिन्दी कवि ८३
नंददास—अष्टछाप के कवि २२
न्यायदर्शन, पुरातन हिन्दी ग्रन्थ ६६
नारद, देवर्षि—भारतीय ऋषि २८, ६०
निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी (१८९६-१९६१) हिन्दी कवि व उपन्यासकार ३७

निशीथ चूर्णिभाष्य, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ११
नेपोलियन, बोनापार्ट (१७६९-१८२१) फ्रेंच सम्राट सेनापति
    नीति ८, ८४
पंचतंत्र—प्राचीन भारतीय ग्रन्थ, रचयिता पं० विष्णु शर्मा ३, ५३
पतंजलि, महर्षि (१५० ईसा पूर्व) योग शास्त्री ६७
परमहंस रामकृष्ण, स्वामी (१८३३-१८८६), भारतीय संत २
प्रेमचन्द (१८८०-१९३६), हिन्दी उपन्यास सम्राट, कथाकार ६,
    २०, २१, २२, २५ ३०, ३२, ३४, ३५, ३८ ३९, ४०, ४६,
    ५५, ६६, ७०, ७१, ८३, ८४, ८५, ८६, ९६, ९७, ९८, १
    १०३, १०४ १०५, १०८, ११२
पोप, ए० (१६८८-१७४४) आलोचक, अंग्रेज कवि १४
प्लूटस (२५४-१८४ ईसा पूर्व), रोमन नाटककार ३६
प्लेटो (४२७-३४८ ई० पू०), राजनीतिज्ञ, यूनानी दार्शनिक, सं
    १४, १५, २०, ३५, १०७
फुलर, टामस (१६०८-१६६१), अंग्रेज पादरी ५
फ्रैंकलिन, बेन्जामिन (१७०६-१७९०), दार्शनिक, अमेरिकन रा
    नीतिज्ञ १८, ४६, १०५, ११०
बर्क, ई० (१७२९-१७९७), अंग्रेज राजनीतिज्ञ, वक्ता १६, २८
बलदेवप्रसाद मिश्र, हिन्दी कवि १६, ३४
बायरन, लार्ड (१७८८-१८२४), अंग्रेज कवि २, ५४, १०१
बालज़क (१७९९-१८५०), फ्रेंच उपन्यासकार १८, ११०
बिहारी (१५९२-१७२१ वि०), हिन्दी कवि ६८, ७१
बेकन, एफ० (१५६१-१६२६), अंग्रेज दार्शनिक २३, ४२, ११२
बोवी (१८२०-१९०४), अमेरिकन लेखक ८२
बृहत्कल्प भाष्य, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ११
बृहदारण्यक उपनिषद्, पुरातन दार्शनिक ग्रन्थ ६०, ६४, ६५, १०२
भक्तपरिज्ञा, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ६६
भगवती आराधना, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ४७, ६६
भगवतीचरण वर्मा (१९०३-) हिन्दी कवि व उपन्यासकार ४८
भजनानंद, स्वामी, भारतीय संत २, २०
भट्ट, उदयशंकर (१८९७-१९६४), उपन्यासकार, कवि व नाटकका
    ५७, ७८
भर्तृहरि (५वीं, ६वीं शती), सिद्धयोगी व उज्जैन के अधिपति ८, ७८
    १०४, १०६, १०८

भद्रबाहु, आचार्य, जैन संत १०, २६, ६५, ६६
मनुस्मृति, भारतीय प्रसिद्ध ग्रंथ, रचयिता मनु १३, ६१, ६३, ६६
मलूकदास (१६२१-१७३९ वि०), भारतीय संत, हिन्दी कवि ५९
महात्मा गांधी, मोहनदास कर्मचंद (१८६९-१९४८), भारत के राष्ट्र-
पिता, अहिंसा के पुजारी १, २६, ३०, ४०, ५०, ५१, ५३, ५४, ५५,
५६, ६०, ६१, ६२, ६६, ६७, ७२, ७९, ८०, ८३, ८९, १००, ११२
महादेवी वर्मा (१९०७-), सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कवियित्री ३१, ७७
महावीर स्वामी, जैनधर्म के संस्थापक ९, १०, ११, २६, २७, ४१, ४२,
४४, ४७, ६४, ६५, ९०
माखनलाल चतुर्वेदी (१८८१-१९६८), हिन्दी लेखक, कवि ५०
माघ (७वीं-८वीं शती), संस्कृत के महाकवि ३७
मार्कट्वेन (१८३५-१९१०), अमेरिकन उपन्यासकार ९९
मुण्डकोपनिषद्, पुरातन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ ९२, ९३
मुसोलिनी (१८८३-१९४५), इटेलियन राजनीतिज्ञ ७
मैथिलीशरण गुप्त (१८८६-१९६४), हिन्दी राष्ट्रकवि २३, २५, ४३,
६०, ७९
मैन, होरेस (१७९६-१८५९), अमेरिकन शिक्षक ६७
यंग, एडवर्ड (१६८३-१७६५), अंग्रेज कवि १, १०७, ११२
यजुर्वेद, भारतीय पुरातन ग्रंथ ६३, ६१, १०७
यजुर्वेदीय उव्वट भाष्य २८
यशपाल, हिन्दी उपन्यासकार ७१
यूरीपिडीज (४८०-४०६ ई० पू०), यूनानी नाटककार ५२
योगदर्शन, भारतीय पुरातन ग्रन्थ १३, ६१
योगवाशिष्ठ, महर्षि वशिष्ठ रचित २७
रसनिधि, हिन्दी कवि ५२, ६९
रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१-१९४१), नोबेल पुरस्कार विजेता, महाकवि
व उपन्यासकार ३, ५, ६, ८, ९, १७, १८, २१, २२, २४, २५, ३१,
३२, ३५, ३८, ३९, ४०, ४१, ४५, ४६, ४९, ५०, ५८, ५९, ६८,
७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ८५, ८६, ८७, ८८, १०१, १०२, १०८
रस्किन, जान (१८१९-१९००) अंग्रेज आलोचक, सुधारक २०, १०८
रांगेयराघव, उपन्यासकार १५
राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली, डॉ० (१८८८-), द्वितीय राष्ट्रपति, महान् भारतीय
दार्शनिक, राजनीतिज्ञ १३, २५, ६२, ६३, ९९

निशीथ चूर्णिभाष्य पुरातन भारतीय ग्रन्थ ९३
नेपोलियन, बोनापार्ट (१७६९-१८२१) फ्रेंच सम्राट सेनानायक नेता
    नीति ० ६९
पंचतंत्र—प्राचीन भारतीय ग्रन्थ रचयिता पं० विष्णु शर्मा ३,९३
पतंजलि महर्षि (१५० ईसा पूर्व) योग दार्शनिक ६७
परमहंस, रामकृष्ण, स्वामी (१८३६-१८८६), भारतीय संत २
प्रेमचन्द (१८८०-१९३६), हिन्दी उपन्यास सम्राट, कथाकार ३, १३
    २०, २१ २२ २५ ३०, ३३ ३४ ३५, ३८ ३९, ४०, ४३, ५१
    ५८ ६९, ७०, ७१, ८३ ८४, ८५, ८६, ९१, ९७, ९९, १०१
    १०३, १०४ १०५, १०८ १११
पोप, ए० (१६८८-१७४४) अंग्रेज कवि १४
प्लूटस (२५४-१८४ ईसा पूर्व) रोमन नाटककार ३६
प्लेटो (४२७-३४७ ई० पू०) राजनीतिज्ञ, यूनानी दार्शनिक, लेखक
    १४, १५, २०, ३५, १०७
फुलर, टामस (१६०८-१६६१), अंग्रेज पादरी ५
फ्रैंकलिन, बेन्जामिन (१७०६-१७९०), दार्शनिक, अमेरिकन राज-
    नीतिज्ञ १८, ४६, १०५, ११०
बर्क, ई० (१७२९-१७९७), अंग्रेज राजनीतिज्ञ, वक्ता १६, २६
बलदेवप्रसाद मिश्र, हिन्दी कवि १६, ३४
बायरन, लार्ड (१७८८-१८२४), अंग्रेज कवि २, २४, १०१
बालज़क (१७९९-१८५०), फ्रेंच उपन्यासकार १८, ११०
बिहारी (१६५२-१७२१ वि०), हिन्दी कवि ६८, ७१
बेकन, एफ० (१५६१-१६२६), अंग्रेज दार्शनिक २३, ४६, ११२
बोवी (१८२०-१९०४), अमेरिकन लेखक ८२
बृहत्कल्प भाष्य, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ११
बृहदारण्यक उपनिषद्, पुरातन दार्शनिक ग्रन्थ ६०, ६४, ६५, १०२
भक्तपरिज्ञा, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ६६
भगवती आराधना, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ४७, ६६
भगवतीचरण वर्मा (१९०३-) हिन्दी कवि व उपन्यासकार ४८
भजनानंद, स्वामी, भारतीय संत २, २०
भट्ट, उदयशंकर (१८९७-१९६४), उपन्यासकार, कवि व नाटककार
    ५७, ७८
भर्तृहरि (५वीं, ६वीं शती), सिद्धयोगी व उज्जैन के अधिपति ८, ७८,
    १०४, १०६, १०८

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली

अथर्ववेद-चौथा वेद, एक पुरातन भारतीय ग्रंथ ६१, ६२
अब्दुर्रहीम खानखाना 'रहीम' (१६१०-१६८२) हिन्दी कवि १६, ३२, ६८, १०२, १०३
अन्नपूर्णोपनिषद्, महान् भारतीय दार्शनिक ग्रंथ २७
अनूप, हिन्दी कवि ६०
डॉ० अमरनाथ झा, (१८९७-१९५५) शिक्षा शास्त्री, अंग्रेजी व हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक २४
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (१९२२, २००४ वि०) हिन्दी कवि १४, ५७, ७०
अरविन्द, महर्षि (१८७२-१९५०) योगी, भारतीय महान् विचारक २४, २६, ६६
अरस्तू (३८४-३२२ ई० पू०) यूनानी महान् दार्शनिक ३४, ३३, ११२
आॅवटन, लार्ड, अंग्रेज लेखक २१
आत्मप्रबोध उपनिषद्, महान् भारतीय दार्शनिक ग्रंथ ८६
आॅस्कर वाइल्ड, अंग्रेजी लेखक ३०
इब्सन, एच० (१८२८-१९०६) नार्वेजियन नाटककार ८
इलियट, जार्ज (१८१६-१८८०) अंग्रेज उपन्यासकार १७,५३
इतिभाषितार्इ, भारतीय पुरातन ग्रंथ ११
ईशावास्योपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ, ७७ ६०
ईसा, महात्मा, ईसाई धर्म के सस्थापक ६१
उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ १००
ऋग्वेद, प्राचीनतम भारतीय ग्रंथ ६३, ८४, ६१
एमर्सन आर० डब्ल्यू० (१८०३-१८८२) दार्शनिक, अमेरिकन कवि १४, ३८, ४३, ४४, ७४, ८०, ८१, १०१
एवरक्रिटी, सी० वी० (१७६६-१८०३) अमेरिकन कवि ३६
ऐतरेय ब्राह्मण, प्राचीन भारतीय ग्रंथ ६१

आवेश

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्म-बल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है।

—महात्मा गांधी

आवेश के प्रभाव से बुद्धि विपरीत हो जाती है।

—अज्ञात

आवेश बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता—इन सबका दिवाला निकाल देता है।

—अज्ञात

आश्चर्य

सम्पूर्ण आश्चर्य अज्ञानता का फल है।

—जानसन

आश्चर्य अज्ञानता-सुता है।

— जार फ्लेरियो

आश्चर्य पूजा का आधार है।

—कार्लाइल

आश्चर्य ज्ञान का मूल है।

—बेकन

आश्चर्य दर्शन का पहला कारण है।

—अरस्तू

आश्चर्य अनिच्छित प्रशंसा है।

—बंग

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमसादनम्।
शेषा जीवि तुमिच्छन्ति कि माश्चर्यमतः परम्॥

(हर रोज जीव मौत के मुख में जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर होना चाहते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य क्या होगा?)

भद्रबाहु, आचार्य, जैन मत १०, २६, ६५, ६६
मनुस्मृति, भारतीय प्रसिद्ध ग्रंथ, रचयिता मनु १३, ६१, ६३, ६६
मलूकदास (१६२१-१७३६ वि०), भारतीय संत, हिन्दी कवि ५६
महात्मा गांधी, मोहनदास कर्मचंद (१८६९-१९४८), भारत के राष्ट्र-
पिता, अहिंसा के पुजारी १, २६, ३०, ४०, ५०, ५१, ५३, ५४, ५५,
५६, ६०, ६१, ६२, ६६, ६७, ७२, ७६, ८०, ८३, ८६, १००, ११२
महादेवी वर्मा (१९०७-), सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कवयित्री ३१, ७७
महावीर स्वामी, जैनधर्म के संस्थापक ६, १०, ११, २६, २७, ४१, ४२,
४४, ४७, ६४, ६५, ९०
माखनलाल चतुर्वेदी (१८८९-१९६८), हिन्दी लेखक, कवि ५०
माघ (७वीं-८वीं शती), संस्कृत के महाकवि ३७
मार्क ट्वेन (१८३५-१९१०), अमेरिकन उपन्यासकार ९९
मुण्डकोपनिषद्, पुरातन भारतीय दार्शनिक ग्रंथ ९२, ९३
मुसोलिनी (१८८३-१९४५), इटैलियन राजनीतिज्ञ ७
मैथिलीशरण गुप्त (१८८६-१९६४), हिन्दी राष्ट्रकवि २३, २५, ४३,
६०, ७६
मैन, होरेस (१७९६-१८५९), अमेरिकन शिक्षक ९७
यंग, एडवर्ड (१६८३-१७६५), अंग्रेज कवि १, १०७, ११२
यजुर्वेद, भारतीय पुरातन ग्रंथ ६३, ९१, १०७
यजुर्वेदीय उव्वट भाष्य २८
यशपाल, हिन्दी उपन्यासकार ७१
यूरीपिडीज (४८०-४०६ ई० पू०), यूनानी नाटककार ५२
योगदर्शन, भारतीय पुरातन ग्रन्थ १३, ६१
योगवासिष्ठ, महर्षि वसिष्ठ रचित २७
रसनिधि, हिन्दी कवि ५२, ६६
रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१-१९४१), नोबेल पुरस्कार विजेता, महाकवि
व उपन्यासकार ३, ५, ६, ८, ९, १७, १८, २१, २२, २४, २५, ३१,
३२, ३५, ३८, ३९, ४०, ४१, ४५, ४६, ४९, ५०, ५८, ५९, ६८,
७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ८५, ८६, ८७, ८८, १०१, १०२, १०८
रस्किन, जान (१८१९-१९००) अंग्रेज आलोचक, सुधारक २०, १०८
रांगेयराघव, उपन्यासकार १५
राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली, डॉ० (१८८८-), द्वितीय राष्ट्रपति, महान् भारतीय
दार्शनिक, राजनीतिज्ञ ११, ३६, ६२, ९३, ९९

निशीथ चूर्णिभाष्य, पुरातन भारतीय ग्रन्थ १३
नेपोलियन, बोनापार्ट (१७६९-१८२१) फ्रेंच सम्राट योग्यतम सेनापति ८, ८४
पंचतंत्र—प्राचीन भारतीय ग्रन्थ, रचयिता पं० विष्णु शर्मा ३,५३
पतंजलि, महर्षि (१५० ईसा पूर्व) योग शास्त्री ६७
परमहस, रामकृष्ण, स्वामी (१८३३-१८८६), भारतीय संत २
प्रेमचन्द (१८८०-१९३७), हिन्दी उपन्यास सम्राट, कथाकार ६, १७, २०, २१, २२, २५, ३०, ३२, ३४, ३५, ३८, ३९, ४०, ४६, ५७, ५८, ६९, ७०, ७३, ८३, ८४, ८५, ८९, ९६, ९७, ९८, १००, १०३, १०४, १०५, १०८, १११
पोप, ए० (१६८८-१७४४) आलोचक, अंग्रेज कवि १४
प्लूटस (२५४-१८४ ईसा पूर्व), रोमन नाटककार ३६
प्लेटो (४२७-३४८ ई० पू०), राजनीतिज्ञ, यूनानी दार्शनिक, लेखक १४, १५, २०, ३५, १०७
फलर, टामस (१६०८-१६६१), अंग्रेज पादरी ५
फ्रेंकलिन, बेन्जामिन (१७०६-१७९०), दार्शनिक, अमेरिकन राजनीतिज्ञ १८, ४६, १०५, ११०
बर्क, ई० (१७२९-१७९७), अंग्रेज राजनीतिज्ञ, वक्ता १६, २६
बलदेवप्रसाद मिश्र, हिन्दी कवि १६, ३४
बायरन, लार्ड (१७८८-१८२४), अंग्रेज कवि २, ५४, १०१
बालजक (१७९९-१८५०), फ्रेंच उपन्यासकार १८, ११०
बिहारी (१६५२-१७२१ वि०), हिन्दी कवि ६८, ७१
बेकन, एफ० (१५६१-१६२६), अंग्रेज दार्शनिक २३, ४६, ११२
बोवी (१८२०-१९०४), अमेरिकन लेखक ८२
बृहत्कल्प भाष्य, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ११
बृहदारण्यक उपनिषद्, पुरातन दार्शनिक ग्रन्थ ९०, ९४, ९५, १०२
भक्तपरिज्ञा, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ६६
भगवती आराधना, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ४७, ६६
भगवतीचरण वर्मा (१९०३-) हिन्दी कवि व उपन्यासकार ४८
भजनानद, स्वामी, भारतीय सन २, २०
भट्ट, उदयशंकर (१८९७-१९६४), उपन्यासकार, कवि व नाटककार ५७, ७८
भर्तृहरि (५वी, ६वीं शती), सिद्धयोगी व उज्जैन के अधिपति ८, ७८, १०४, १०६, १०८

वृन्द (१७४८-६१ रचनाकाल), हिन्दी कवि ३७, ४६, ५१, ५२
शंकराचार्य, स्वामी, भारतीय युगप्रवर्तक संत १, ५, १३, २८, ३६, ६
शतपथ ब्राह्मण, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ६३
शरच्चन्द्र (१८७६-१९३७), सुप्रसिद्ध बँगला उपन्यासकार व कथ
कार ४५
शरण (१९२८-), उपन्यासकार व आलोचक ७, ३२, ३६, ७३, ८
१११
शांख्यायन आरण्यक, पुरातन भारतीय ग्रन्थ ६२
शिलर, जे० सी० एफ० (१७५९-१८०५), कवि व जर्मन नाटकक
२८
शिवानन्द, स्वामी (१८८८-), अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय स
२३, ६७
शुक्राचार्य, भृगु ऋषि के पुत्र २०
शेक्सपियर, विलियम (१५६४-१६१६), सर्वश्रेष्ठ अंग्रेज नाटककार
कवि २, १४, ३०, ४०, ४८, ५२, ५४, ७७, ११०
शैली, पी० बी० (१७९२-१८२२), अंग्रेज कवि १७, २१, २३
शैम्फोर्ट (१७४१-१७९४), फ्रेंच व्यंग्य लेखक ५२
शोपेनहार, ए० (१७८८-१८६०), जर्मन दार्शनिक ७८, १०२, ११०
श्वेताश्वतर उपनिषद्, भारतीय दार्शनिक ग्रन्थ ६५
श्रीकृष्ण, विष्णु के अवतार, गीता के रचयिता १२, २५, २६, २६, ३
५१, ७५, ८५, ६५
सफोक्लीज (४९७-४०६ ई० पू०), यूनानी नाटककार ४, २५, ५१
सम्पूर्णानन्द, डॉ० (१८९०-), राजनीतिज्ञ व हिन्दी लेखक १, ६८
साउथ ५४
सादी, शेख (११८४-१२९१), ईरानी कवि विचारक ७, १६, ५०
सानेगुरुजी, सुप्रसिद्ध मराठी विचारक ६८, ७०
सावरकर, विनायक दामोदर, भारतीय राजनीतिज्ञ ५५, ५६, ७५
सामरसेट माम, विश्वविख्यात उपन्यासकार १००
सांख्यदर्शन, भारतीय पुरातन ग्रन्थ ६६
सिडनी, सर पी० (१५५४-१५८६), अंग्रेज कवि ७
सिसरो (१०६-४३ ई० पू०), राजनीतिज्ञ, रोमनवक्ता २३, ४८
सीकर, डब्ल्यु०, अंग्रेज पादरी २६।
सुकरात (ईसापूर्व), यूनानी दार्शनिक ८६, १११
सुदर्शन, प० बदरीनाथ, हिन्दी कथाकार व उपन्यासकार १६, १०३

मकुमार वर्मा, डॉ० (१९६२ वि०) हिन्दी कवि, समालोचक, एकांकी
नाटककार ३६
मगेमाधव वर्मा, हिन्दी कवि १६
मधारिस उपाध्याय, हिन्दी कवि ३६
मतीर्थ, स्वामी (१८७३-१९०६), भारतीय संत ४८, ७१, १००,
१०१, १०६
मनरेश त्रिपाठी (१८८६-१९६१), हिन्दी कवि व लेखक १६, ७८
मेश्वर करुण, हिन्दी कवि ७६
मानन्द तिवारी, हिन्दी कवि ८८
बर्टबर्न्स, १८
टर, १०६
बेल्ट, एफ० डी० (१८८२-१९४५), अमेरिकन राष्ट्रपति ७७
नारायण पाडेय, हिन्दी कवि ७०
ो, जे० जे० (१७१२-१७७८), सुप्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक १
या रोला (१८६६-१९४४), नोबेल पुरस्कार विजेता, फ्रेंच लेखक १११
नेन (१८७०-१९२४), रूसी राजनीतिज्ञ ७६
ोया (१९११-१९८३), फ्रेंच लेखक १६
लभभाई पटेल (१८७५-१९५०), महान् भारतीय राजनीतिज्ञ ७३
डिंबर्च, २०
ल्टेयर (१६९४-१७७८), फ्रेंच साहित्यकार १६, ४०, ५७
ल्मीकि, महर्षि, आदि कवि, रामायण के रचयिता ४, ३७, ७४, १०६
दुर, महाभारतकालीन भारतीय संत १६, ६७
नोबा भावे, आचार्य (१८९५-), भूदान यज्ञ के जनक १६, ३३, ५५,
५६, ५८, ६२, ६७, ७४, ७५, १०७
योगीहरि, हिन्दी कवि १५, ४८, ६६, ८३
वेकानन्द (१८६३-१९०२), महान् भारतीय संत १, ४, ३०, ४८, ८०, ९८
लियम पिट, १११
शेषावश्यक भाष्य, भारतीय पुरातन ग्रन्थ १२, ४३
ष्णुपुराण, पुरातन भारतीय धार्मिक ग्रन्थ २८।
वर, एच० डब्ल्यू० ५८
, पुरातन भारतीय आध्यात्मिक ग्रन्थ ४, ५, ३३
ान्त दर्शन, ६६
ास, महर्षि, अठारह पुराणों व महाभारत के रचयिता १२, २०,
४५, ६२, ६३, ७५, ११२

आप चाहे शिक्षार्थी हों, प्राध्यापक हों, साहि
या राजनीतिज्ञ हों, महापुरुषों की सूक्तियाँ अ
प्रेरणा का स्रोत हैं। प्रस्तुत ग्रंथ 'वृहत् सूक्ति
विश्व भर के प्रतिष्ठित कवियों, लेखकों,
इतिहासकारों, संतों, मनीषियों एवं विचारकों
वाणी मूल व अनूदित सूक्तियों के रूप में संकलि

ये सूक्तियाँ निरुत्साहितों में उत्साह, अ
ज्ञान और अन्धकार में घिरे लोगों में जहाँ
संचार करती हैं, वहाँ आपके जीवन-पथ
तथा अन्तरतम की असह्य पीड़ा को क्षणमात्र
देती हैं। वास्तव में सूक्तियाँ हमारे बौद्धि
कल्पतरु बनकर आई हैं।

इसी कल्पतरु का पाठकों की सुविधा
जगत् के जाने-माने साहित्यकार श्री शरण ने
एवं विषयानुसार वर्गीकरण कर बारह खंडों
किया है। अनूदित सूक्तियों में विशेष रूप से
रखा गया है कि उनकी मौलिकता पूर्णरूपेण
ताकि पाठक अपनी राष्ट्रभाषा में ही मूल रूप
ले सके। यही इस पुस्तकमाला की विशेषता है

छान्दोग्य उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रन्थ ८५, ८६, ९३, ९४
जयशंकर प्रसाद (१९४६-१९९४ वि० सं०), हिन्दी कवि, उपन्यासकार, नाटककार, १५, २०, २१, २२, ३३, ३४, ३५, ३६, ४०, ४५, ४६, ४९, ५१, ५३, ५७, ६६, ७१, ८०, १०१, १०२, ११०
जवाहरलाल नेहरू, पंडित (१८८९-१९६४), प्रथम प्रधानमंत्री, भारतीय राजनीतिज्ञ नेता, वक्ता व यशस्वी लेखक १०३, १०७
जानसन, सैमुएल (१७०४-१७८४), अंग्रेज लेखक व आलोचक २६, १०९, ११२
जार फ्लेरियो (१५५३-१६२५), अंग्रेज लेखक ११२
जेरोल्ड, डी० (१७०३-१८५३), अंग्रेज नाटककार ३
जैनेन्द्रकुमार (१९०५-), प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यासकार, कथाकार व दार्शनिक चिंतक ५७, ६०, ७२, ९७, ९९
जोधराज, हिन्दी कवि ४२
टामसन, जे० (१७००-१७४८), स्काटिश कवि ७
टेनीसन, लार्ड (१८०९-१९१०), अंग्रेज राजकवि ८१
टेलर, जेरेमी (१६१३-१६६७), अंग्रेज पादरी १४, १०७
डिकेन्स, चार्ल्स (१८१२-१८७०), अंग्रेज उपन्यासकार १४
डिजरायली (१८०४-१८८१), उपन्यासकार, अंग्रेज राजनीतिज्ञ १०५
डेलकारनेगी, प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक ४०, ८१, १०९, ११०
तिलक, बालगंगाधर, लोकमान्य (१८५६-१९२०), भारतीय राजनीतिज्ञ, तथा यशस्वी लेखक ५६
तिरुवेल्लुवर, संत (१०० ईसा पूर्व), महान् तमिल संत १०५, १०९
तुलसीदास (१५८९-१६८० वि० सं०), महान् भारतीय संत, हिन्दी महाकवि १५, २५, ३८, ५१, ५२, ७७, १०३, १०६
तैत्तिरीय उपनिषद्, प्राचीन भारतीय दार्शनिक संत ९१
दाँते, ए० (१२६५-१३२१) इटैलियन महाकवि ११०
द्वारकाप्रसाद मिश्र—हिन्दी कवि २३, ३४, ३९, ४१, ७६, ८८
दिनकर, रामधारीसिंह (१९६५ वि० सं०), भारत सरकार के हिन्दी परामर्शदाता, हिन्दी कवि ५, ६, २३, ३०, ३१, ८२
दीनदयाल गिरि—हिन्दी कवि ८३
नंददास—अष्टछाप के कवि २२
न्यायदर्शन, पुरातन हिन्दी ग्रन्थ ९६
नारद, देवर्षि—भारतीय ऋषि २८, ९०
निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी (१८९६-१९६१) हिन्दी कवि व उपन्यासकार ३७